RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

11 बचपन से ही बच्चों को सिखाएं - संस्कार और कर्म ही सबसे बड़ी पूंजी हैं...

09 देशभर से आए 17 पद्मश्री विभूतियों का किया सम्मान..

वर्ष ▸ 09 | अंक ▸ 07 | हिन्दी (मासिक) | जुलाई ▸ 2022 | पृष्ठ ▸ 16 | मूल्य ▸ ₹ 12.50

ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय ▸ चार दिवसीय अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रशिक्षण आयोजित

500 युवाओं ने सीखे पत्रकारिता के गुण

अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रशिक्षण आयोजित

{ दिल्ली से पधारे वरिष्ठ पत्रकार संजय सिंह, दूरदर्शन से मनीष वाजपेयी और जयपुर से पधारे राजेश असनानी ने बताईं पत्रकारिता की बारीकियां }

समाचार वह समसामयिक सूचना है, जिसमें जन रूचि जुड़ी हो और लोग उसे जानने के लिए उत्सुक हों।

▸ शिव आमंत्रण, आबू रोड। समाज सुधार, सामाजिक कल्याण के साथ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़े युवा भाई-बहनों ने मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता को बढ़ावा देने का भी बीड़ा उठाया है। इसके लिए वह बाकायदा पत्रकारिता की बारीकियां सीख रहे हैं। इनका मकसद है समाज बदलाव में भूमिका निभा रहे लोगों की कहानियों को पत्रकारिता के माध्यम से सबके सामने लाना, ताकि इससे अन्य लोग भी प्रेरणा ले सकें। इसे लेकर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन स्थित मेडिटेशन हॉल में चार दिवसीय अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें देशभर से 500 से अधिक युवाओं ने भाग लिया।

इस दौरान प्रशिक्षु पत्रकारों को समाचार लेखन की तकनीक, वीडियो शूटिंग, कैमरा हैंडलिंग, एंकरिंग, रिपोर्टिंग, फीचर स्टोरी राइटिंग से लेकर पब्लिक रिलेशन के टिप्स दिए गए। शुभारंभ पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता, मीडिया विंग के उपाध्यक्ष बीके आत्मप्रकाश ने कहा कि आज इतने पत्रकारों को देखकर खुशी हो रही है। मुख्यालय संयोजक बीके शांतनु ने मीडिया सेवाओं के लिए तकनीकी प्रशिक्षण दिया। संचालन मीडिया विंग भोपाल की जोनल को-ऑर्डिनेटर डॉ. बीके रीना ने किया। राजयोग शिक्षिका बीके कविता, शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेंद्र, मधुबन न्यूज के ब्यूरो चीफ बीके रावेंद्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अब लोग सभी प्लेटफॉर्म पर पॉजीटिव न्यूज़ ही देखना चाहते हैं

आज पत्रकारिता में तेजी से लोगों की न्यूज़ को लेकर धारणा बदल रही है। सभी न्यूज़ प्लेटफॉर्म आज पॉजीटिव न्यूज़ चाहते हैं। अब लोग नकारात्मक खबरों से ऊब चुके हैं। समाज भी अब सकारात्मक, मोटिवेशनल स्टोरी को देखने, सुनने और पढ़ने के लिए रुचि लेने लगा है। सोशल मीडिया के इस दौर में पत्रकारिता के सामने कई चुनौतियां भी हैं। पत्रकारिता एक जुनून है। दिन-रात हम लोग खबरों में जीते हैं। खबर को क्रिएट करना एक टेक्निक है। सैकड़ों खबरों के बीच अच्छी खबरों का चुनाव करना एक चुनौती का कार्य होता है। पत्रकारिता में आने के बाद हमारी चीजों को देखने का नजरिया बदल जाता है।

• संजय सिंह, डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकर, मीडिया ट्रेनर और वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली

मीडिया समाज का डॉक्टर है

जैसे निशाने पर तीर छूटने के बाद वापिस नहीं आता है, वैसे ही पत्रकारिता में खबर चलने के बाद उसे रोक पाना असंभव है। मीडिया समाज का डॉक्टर है। व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी ने दुनिया को तबाह कर दिया है। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद मेरा दुनिया को देखने का नजरिया बदल गया। यहां के ज्ञान से मेरी थॉट्स प्रोसेस बदल गई। यह दुनिया की अनोखी यूनिवर्सिटी है। कोई व्यक्ति दुनिया नहीं बदल सकता है। • राजेश असनानी, वरिष्ठ सहायक संपादक, न्यू इंडियन एक्सप्रेस, जयपुर

एक अच्छे पत्रकार के लिए मूलभूत गुण

अच्छा सुनना, पढ़ना और देखना जरूरी है। आप जितने अच्छे श्रोता होंगे उतने ही अच्छे वक्ता, लेखक होंगे। रोज कुछ न कुछ सकारात्मक लेख, पुस्तकें पढ़ें और लिखें भी। लिखने से हमारी विचार शक्ति का विकास होता है, शब्दों का भंडार बढ़ता है। हमारे पास जितने ज्यादा शब्द होंगे, लेखन उतना ही प्रभावी होगा। पत्रकारिता में आने से चीजों को देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है। अपनी कलम से समाज को नई दिशा दे पाने में यदि हम सफल हैं तो सही मायने में यही सच्ची पत्रकारिता है।

• मनीष वाजपेयी, सलाहकार संपादक, दूरदर्शन, नई दिल्ली

आज प्रत्येक व्यक्ति बन गया है पत्रकार

सोशल मीडिया के दौर में हर एक व्यक्ति पत्रकार बन गया है। हम खुद ही पत्रकार और संपादक हैं। ऐसे में भाषा का स्तर भी प्रभावित हुआ है। सकारात्मक व प्रेरणादायक कार्यों को बढ़ावा देने के लिए आप सभी इसका अच्छा उपयोग कर सकते हैं। सोशल मीडिया में जितनी जल्दी नेगेटिव न्यूज़ वायरल होती है उतनी ही जल्दी पॉजीटिव न्यूज़ भी वायरल होती है। सभी ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक खबरों को प्रसारित करेंगे तो निश्चित रूप से समाज में सकारात्मक माहौल बनेगा। • सुजीत झा, असिस्टेंड एडिटर, डिजीटल मीडिया, आज तक, नई दिल्ली

बीके युवा पत्रकारिता सीख रहे यह गर्व की बात

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े युवा इतनी बड़ी तादाद में पत्रकारिता सीख रहे हैं यह अपने आप में गर्व की बात है। आप सभी को अपनी कलम के माध्यम से आध्यात्मिकता और राजयोग मेडिटेशन का संदेश आखिरी छोर के व्यक्ति तक पहुंचाना है। संस्थान किसान से लेकर युवा, महिला, बच्चे समाज के हर वर्ग के लिए विभिन्न अभियान चला रहा है। मूल्यनिष्ठ और सकारात्मक पत्रकारिता के माध्यम से अब समाज में सकारात्मक खबरों को भी बढ़ावा दिया जाएगा।

• ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

मीडिया से लोगों को मिल रही प्रेरणा

आज मीडिया बहुत पॉवरफुल है। ऐसे में किसी भी बात का प्रचार-प्रसार बहुत जल्दी हो जाता है। आप सभी यहां से पत्रकारिता की मूलभूत बातों को सीखकर अपने-अपने स्थानों पर समाज बदलाव में भूमिका निभा रहे लोगों को बढ़ावा दें। ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया के सभी प्लेटफॉर्म पर सिर्फ सकारात्मक, प्रेरक, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों से भरपूर स्टोरी, साक्षात्कार, प्रवचन, टीवी शो, फिल्म और गीत आदि देखने को मिलेंगे, जिनका लाभ देश-दुनिया में लाखों लोगों को मिल रहा है।

• ब्रह्माकुमारी संतोष दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

टीवी रिपोर्टिंग के लिए जरूरी बातें

खबर क्या होती है?

समाचार को अंग्रेजी में न्यूज कहा जाता है, जो न्यू का बहुवचन है। ये लेटिन के 'नोवा' एवं संस्कृत के 'नव' से बना है। कहने का तात्पर्य यही है कि जो नित्य-नूतन हो, वही समाचार है।

हेडन के कोश के अनुसार: समस्त दिशाओं की घटना को समाचार की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। 'न्यूज' के चार अक्षर चार दिशाओं के आरंभिक अक्षर है- नार्थ (उत्तर), ईस्ट (पूर्व), वेस्ट (पश्चिम) तथा साउथ (दक्षिण)। उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण चारों दिशाओं में घटित होनी वाली जानने योग्य सूचना, घटनाओं को समाचार कहते हैं।

एक अन्य परिभाषा के अनुसार: समाचार वह समसामयिक सूचना है, जिसमें जन रूचि जुड़ी हो और लोग उसे जानने के लिए उत्सुक हों। बिना जनरुचि के कोई सूचना समाचार नहीं हो सकती है। समाचार में भी कई प्रकार होते हैं जैसे पर्यावरण समाचार, राजनीति समाचार, खेल समाचार, क्षेत्रीय समाचार, राज्य समाचार, राष्ट्र समाचार इत्यादि।

स्टोरी एक फीलिंग है...

संजय सिंह के अनुसार न्यूज की परिभाषा: न्यूज़ को चार भागों में बांटा जा सकता है, इसी थीम पर कोई फिल्म, डॉक्यूमेंट्री इसी थीम पर बनाई जाती है। स्टोरी एक फीलिंग है। जब तक आप उसे फील नहीं करेंगे तब तक आप अच्छी स्टोरी नहीं लिख सकते हैं। आपकी स्टोरी सक्सेसफुल तभी है जब उससे समाज में कोई संदेश जा रहा है। समाज में ऐसी कहानियों को ढूंढकर उन्हें कवर करें जो किसी बदलाव में रोल मॉडल की भूमिका निभा रहे हैं। कंटेंट में दम होगा, तभी आपकी स्टोरी बिकेगी।

सेटिंग्स: इसमें न्यूज़ से संबंधित उसकी भौगोलिक जानकारी आ जाती है। कोई भी फिल्म या डॉक्यूमेंट्री बनाने के पहले संबंधित स्थान के बारे में गहन अध्ययन करके संपूर्ण जानकारी जुटाई जाती है। जैसे कहां पर उसे दर्शाना है, उससे कौन जुड़े हैं, कब, क्यों, कैसे आदि का समावेश इसमें होता है।

कैरेक्टर: प्रोग्राम में एक कैरेक्टर जरूर होता है। जो उस स्टोरी का मुख्य आकर्षण होता है।

विलन: जितना स्ट्रांग आपका कैरेक्टर होता है, उतना ही स्ट्रांग विलन होता है।

रेजुलेशन: किसी स्टोरी या प्रोग्राम का समापन खुशी के साथ हो। विजुअल में इसका ध्यान रखना जरूरी है। इसके साथ ही प्रोग्राम में इनोवेशन जरूरी है। जब भी कोई डॉक्यूमेंट्री या टीवी के लिए स्टोरी बनाएं तो उसमें कुछ अलग हटकर करें।

टीवी न्यूज़ बनाने की प्रक्रिया

शॉट्स: न्यूज़ चैनल में खबर के लिए सूचना या घटना से संबंधित शॉट्स होना जरूरी है। शॉट्स या विजुअल के माध्यम से ही हम कार्यक्रम या घटना को दिखा पाते हैं। किसी कार्यक्रम के अलग-अलग 30 सेकंड के शॉट्स लें। जैसे- 30 सेकंड स्टेज, अतिथि का वक्तत्व, पब्लिक, कार्यक्रम का बैनर आदि के शॉट्स लिए जा सकते हैं।

बाइट: बाइट का शॉट्स 30 सेकंड से ज्यादा का न हो। हम जिसकी बाइट ले रहे हैं उसका नाम, पद, स्थान आदि का उल्लेख स्क्रिप्ट में जरूर करें।

टिक-टैक: घटना स्थल या मौके पर रिपोर्टर और व्यक्ति के मध्य संवाद को टिक-टैक कहते हैं। इसका फुटेज अधिक दो मिनट से ज्यादा का न हो।

वॉक थ्रू: रिपोर्टिंग के दौरान घटनास्थल पर चलते हुए रिपोर्टिंग करना, क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है आदि का विवरण ही वॉक थ्रू कहलाता है।

पीटीसी (पीस टू कैमरा): जब कोई महत्वपूर्ण समाचार हो तो ही उसमें पीटीसी के माध्यम से रिपोर्टर घटना के संबंध में विवरण पेश करता है।

इंटरव्यू: किसी शख्सियत का इंटरव्यू लेते समय स्टेज पर पर्याप्त लाइटिंग के साथ तीन कैमरे लगाना जरूरी है। जो क्लोज शॉट, मिड शॉट और लांग शॉट कवर कर सकें। जिसका हम इंटरव्यू लेने जा रहे हैं पहले से उसकी सारी जानकारी, उपलब्धि, विशेष योग्यता, जीवन के संस्मरण, विवाद आदि की संपूर्ण जानकारी हो।

खबर की जान होती है हैडिंग

- **हैडिंग रोचक और खबर का प्रतिनिधित्व करने वाली हो**
- **समाचार में नवीनता, स्पष्टता, सत्यता,**

किसी भी खबर की हैडिंग (शीर्षक) जान होती है। हैडिंग जितनी मारक, रोचक, आकर्षक और गहराईपूर्ण हो खबर को पढ़ने की जिज्ञासा उतनी ही तीव्र होती है। हैडिंग के ऊपर ही पूरी खबर टिकी होती है। हैडिंग अपने आप में परिपूर्ण होती है। खबर के साथ दो सब हैडिंग भी होना बेहद जरूरी है जो उस हैडिंग का सपोर्ट करती हों। इसके बाद खबर में सबसे महत्वपूर्ण तत्व इंट्रो होता है। इंट्रो जितना सारगर्भित, रोचक होगा पाठक उस खबर को पढ़ने में उतनी ही रुचि लेगा। इंट्रो में फाइव डब्ल्यू और वन एच को समावेश होना जरूरी है।

पत्रकारिता से बदल जाता है नजरिया

मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता समय की जरूरत है। यहां से देशभर में मूल्यनिष्ठ पत्रकारों की नर्सरी तैयार की जा रही है। ब्रह्माकुमार भाई-बहनें जब पत्रकारिता करेंगे तो निश्चित है कि समाज में सिर्फ और सिर्फ सकारात्मक खबरों को परोसा जाएगा। पत्रकारिता में आने के बाद हमारी स्किल डवलप हो जाती है। हमारा चीजों को देखने का नजरिया बदल जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ का डिवाइन मीडिया समाज में बहुत बड़े बदलाव का वाहक बन रहा है। यहां सिर्फ और सिर्फ सकारात्मक खबरों को ही परोसा जाता है।

• बीके कोमल, एडिटर, मधुबन न्यूज़ व पीआरओ, ब्रह्माकुमारीज़

टीवी रिपोर्टिंग की शब्दावली

पैन: कैमरा को दाएं से बाएं और बाएं से दाएं घुमाना।

टिल्ट: ऊपर और नीचे कैमरा घुमाना।

जूम: इन-एंड-आउट कैम: आईरिस वह होता है जो कैमरे में प्रकाश को प्रवेश देता है।

वाइट बैलेंस: वाइट बैलेंस करना यानी कि सबसे पहले आप कैमरा को बताते हैं कि एक्चुअल व्हाइट क्या है और फिर आपका कैमरा बाकी सारे एडस्टमेंट खुद ही कर लेता है।

शटर: शटर का उपयोग स्टिल कैमरा में होता है।

ऑडियो: ध्वनि जो वीडियो के साथ जाने के लिए दर्ज की जाती है।

फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज

सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज ब्रीफ रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुंचाई जाती है। इसमें कम से कम शब्दों में महत्वपूर्ण सूचना दी जाती है।

ड्राई एंकर

इसमें एंकर खबर ब्रीफ के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहां, क्या, कब और कैसे हुआ। जब तक खबर के दृश्य नहीं आते एंकर, दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएं पहुंचाता है।

फोन-इन

इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके दर्शकों तक सूचनाएं पहुंचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहां से उसे जितनी ज्यादा से ज्यादा जानकारी मिलती हैं, वह दर्शकों को बताता है। कई स्थितियों में फोन-इन के दौरान रिपोर्टर मौके पर नहीं होता है लेकिन वह उस घटना की प्राप्त जानकारी के अनुसार दर्शकों को बताता है।

एंकर-विजुअल

जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

एंकर-बाइट

बाइट यानी कथन। टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।

लाइव

लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टीवी चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुंचाए जा सकें। इसके लिए वह मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन, ओबी वैन के जरिए घटना के बारे में सीधे दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।

एंकर पैकेज

किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफिक्स के जरिए जरूरी सूचनाएं दर्शकों तक पहुंचाई जाती हैं। टेलीविजन लेखन इन तमाम रूपों को ध्यान में रखकर किया जाता है। जहां जैसी जरूरत होती है, वहां वैसे वाक्यों का इस्तेमाल होता है। शब्द का काम दृश्य को आगे ले जाना है, ताकि वह दूसरे दृश्यों से जुड़ सके।

शख्सियत

दुनिया के रिश्ते अटैचमेंट के हैं, सच्चा प्यार सिर्फ एक परमात्मा से ही मिल सकता है: शहनाज गिल

शहनाज गिल
टीवी एक्ट्रेस

एक कार्यक्रम में बॉलीवुड अभिनेत्री शहनाज गिल ने आध्यात्म से जुड़े अपने अनुभव किए सांझा

गिल ने बच्चों को सीख देते हुए कहा- एंटरटेनमेंट वर्ल्ड को रियल में एप्लाई नहीं करें

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। वास्तव में हम सभी आत्माएं हैं। प्रत्येक आत्मा अपने आप में अनोखी है। हम सभी इस सृष्टि रंगमंच पर अपना-अपना रोल प्ले कर रहे हैं। दुनिया में जो रिश्ते हैं वह सब अटैचमेंट है। किसी भी रिश्ते से सच्चा प्यार नहीं मिल सकता है। सच्चा प्यार सिर्फ एक परमात्मा से ही मिल सकता है। मैंने जो ज्ञान ब्रह्माकुमारीज़ से सीखा है उसे जीवन में एप्लाई भी करती हूं। यह दुनिया टेम्परेरी वर्ल्ड है। रियल वर्ल्ड तो ऊपर परमधाम है। बच्चे और युवा एंटरटेनमेंट वर्ल्ड को रियल में एप्लाई नहीं करें। मेरे विचारों की क्वालिटी सकारात्मक होने के पीछे मेरी प्योरिटी (पवित्रता) है।

आध्यात्म से जुड़े यह अनुभव बॉलीवुड अभिनेत्री शहनाज गिल ने एक कार्यक्रम के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ से आध्यात्मिक ज्ञान लेने और राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद कैसे उनकी थिंकिंग चैंज हो गई। थॉट्स में पॉजिटिविटी आ गई। गिल ने कहा कि मैं रोज समय निकालकर राजयोग मेडिटेशन करती हूं।

बेटियों को मेंटली स्ट्रांग होना सबसे जरूरी

अभिनेत्री गिल ने कहा कि आज सबसे जरूरी है कि अपनी बेटियों को मेंटली स्ट्रांग बनाएं। अपने साथ स्प्रीचुअल जर्नी को एड कर लो तो कोई आपको हरा नहीं सकता है। लाइफ में ज्ञान बहुत जरूरी है। ज्ञान से ही कॉन्फिडेंस आता है। कॉन्फिडेंस ही सफलता का आधार है। यदि आपमें कॉन्फिडेंस है तो कोई आपको कभी हरा नहीं सकता है। वास्तव में जो झुकता है, नम्रता से चलता है वही जीवन में आगे बढ़ता है।

लड़कियों के पंख काटना बंद करो

गिल ने बच्चों के माता-पिता से आह्वान किया कि सभी मां-बाप अपने लडक़ों को हर लड़की की इज्जत करना सिखाएं। सभी को समान परवरिश दें। लड़के-लड़कियों की तुलना करना बंद करो। अपने बच्चों के साथ क्लोज रहें, ताकि उनकी लाइफ में जब कोई प्रॉब्लम आए तो वह आपके साथ शेयर कर सकें। अपनी बेटियों को फ्रेंड बनाएं। जब हर एक लड़का-लड़की की इज्जत करेगा तो सारी समस्याएं खत्म हो जाएंगी। कभी भी लड़कियों को डीमोटिवेट नहीं करें। आज से सभी संकल्प करें कि बेटियां बिचारी नहीं हैं, वह शक्ति का अवतार हैं। लड़कियों के पंख काटना बंद करो, उन्हें वीक हमने बनाया है। क्या पता किसी को बीके शिवानी, कल्पना चावला बनना है तो किसी को इतिहास बदलना है। शिक्षक जैसे आप घर में अपने बच्चों को ट्रीट करते हैं, वैसे ही स्कूल में ही विद्यार्थियों को अपना बच्चा समझकर प्यार से ट्रीट करें, उन्हें मूल्यों की शिक्षा दें।

मैं अपनी गलतियों से सीखती हूं...

गलतियां सभी से होती हैं लेकिन जो खुद की गलतियों से सीखता है वह बहुत आगे आता है। ऐसा नहीं है कि मैं गलतियां नहीं करती हूं। मुझसे भी गलतियां होती हैं। लेकिन मैं अपनी गलतियों से सीखती हूं। उन्हें परखकर अपनी ताकत बना लेती हूं। जब भी मुझसे गलती होती है तो भगवान को धन्यवाद देती हूं, क्योंकि ठोकरे खाकर ही हमें अक्ल आती है। हमारे थॉट्स ही हमारे संस्कार बनाते हैं। जैसे हमारे थॉट्स होते हैं, वैसे ही हमारे संस्कार बनते हैं।

सतयुग लाना है तो संस्कार दिव्य बनाना होंगे

मैं आज भी एक विद्यार्थी हूं और सीख रही हूं। मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे परमात्मा की सेवा करने का अवसर मिला। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर हम सभी अभिनय कर रहे हैं। हम डेली रूटीन में जो कार्य कर रहे हैं, सदा भगवान का ध्यान रखें। सबसे पहले हम परमात्मा के बच्चे है। ब्रह्माकुमारीज़ के वातावरण में इतनी पॉजिटिविटी है कि इसे सब फील कर सकते हैं। यदि हमारे कर्म अच्छे हैं तो फल भी अच्छा ही मिलेगा। परमात्मा की रजा में रहेंगे तो आज यदि लाइफ में दुःख है तो कल सुख जरूर आएगा। परमात्मा को याद करने से हमें शान्ति मिलती है। हमें सतयुग लाना है तो परमात्मा की याद से अपने संस्कार दिव्य बनाना होंगे। समय निकालकर खुद से भी बातें करें। जीवन में आगे बढ़ने के लिए कॉन्फिडेंस बहुत जरूरी है। सदा अपने प्रति ईमानदार और वफादार रहें। हम दूसरों को तो गुमराह कर सकते हैं लेकिन खुद की सच्चाई से नहीं भाग सकते। मैं हमेशा जो बोलती हूं, जैसी हूं दिल से बोलती हूं।

तन-मन को स्वस्थ रखने के लिए मेडिटेशन जरूरी: दादी

● माइंड-बॉडी-मेडिसिन पर मुख्यालय में चिकित्सकों का सम्मेलन आयोजित

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। आज जितनी दवाइयां और साधन तेजी से बढ़ रहे हैं उतनी ही तरह की बीमारियां बढ़ रही हैं। तन की अधिकतर बीमारियों का कारण मन है। मन यदि ठीक नहीं है तो मानव शरीर में बहुत कुछ बदल जाता है। इसलिए तन के साथ मन को ठीक रखने के लिए मेडिसिन के साथ मेडिटेशन को भी जीवन का अंग बनाएं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किए। वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के ग्लोबल ऑडिटोरियम में मेडिकल प्रभाग द्वारा माइंड-बॉडी-मेडिसीन विषय पर आयोजित चिकित्सकों के सम्मेलन को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि लोग पुनः प्राचीन संस्कृति की ओर लौट रहे हैं। यदि बीमारियों का स्थायी इलाज चाहिए तो उसके लिए दिनचर्या, खान-पान और आहार-विहार शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए राजयोग ध्यान एक अच्छी प्रक्रिया है जो मन को स्वस्थ रखती है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि हमारे मन में बहुत बड़ी शक्ति है। यदि हम उसकी शक्ति को पहचान लें तो कुछ भी असंभव नहीं होगा हमारे लिए। जीबी पंत हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. मोहित गुप्ता ने कहा कि जो हमारे मन में चलता है उसका असर पूरे शरीर पर पड़ता है। केवल पड़ता ही नहीं बल्कि प्रभावित भी करता है। केवल हमारी सोच में एक ऐसा जादू है कि पल भर में पूरा माहौल बदल देता है। यही एक बड़ा शस्त्र है कि हम अपने आपको सही नहीं रख पाते क्योंकि हम इस पर अटेंशन नहीं देते हैं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. बीके निर्मला, ग्लोबल अस्पताल के निदेशक डॉ. प्रताप मिडढा, मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी लाल, प्रयागराज से पधारीं बीके मनोरमा, डॉ. मोनिका गुप्ता, डॉ. एमडी गुप्ता, बीके लीला ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, बीके बृजमोहन तथा अन्य अतिथि।

उद्घाटन राज्यस्तरीय प्रशासक सेवा प्रभाग के अभियान का उद्घाटन

आत्मा के बारे में अधिक से अधिक जानना ही आध्यात्म है: राज्यपाल

» शिव आमंत्रण, राजापार्क/जयपुर। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत प्रशासक सेवा प्रभाग की थीम 'प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए आध्यात्मिकता' का राज्यस्तरीय उद्घाटन समारोह राजभवन में आयोजित किया गया। इसमें राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहां कि प्रशासन एवं आध्यात्म में गहरा संबंध है। प्रशासन को चलाने के लिए नैतिक मूल्यों को अपनाना और अपने कर्तव्यों का पालन करना अति आवश्यक है। साथ ही आत्मा के बारे में अधिक से अधिक जानना यही आध्यात्म है और आध्यात्म से सकारात्मकता का विकास होता है।

प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा और गुरुग्राम ओआरसी की निदेशिका बीके आशा ने कहा कि शांति से बढ़कर कोई संपत्ति नहीं है। प्रशासन में लव एवं लॉ का बैलेंस होना जरूरी है। यह बैलेंस रखने में आध्यात्मिकता हमें शक्ति प्रदान करती है। आध्यात्म प्रशासन में सही निर्णय शक्ति को बढ़ाने में मदद करता है और जीवन में दुआओं का खजाना जमा होता है। जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके पूनम ने कहा कि प्रशासन में सेवा भाव, करुणा, क्षमा का गुण अति महत्वपूर्ण है। माउंट आबू से आए मुख्यालय संयोजक बीके हरीश, कानपुर से आए रिटायर्ड आईएएस सीताराम मीणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल के साथ ज्ञान चर्चा

» शिव आमंत्रण, रॉबर्ट्सगंज/उप्र। उत्तरप्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल के सोनभद्र जनपद के एक दिवसीय भ्रमण पर पहुंचीं। इस दौरान रॉबर्ट्सगंज सेवाकेंद्र की संचालिका बीके सुमन, बीके प्रतिभा, डॉ. अनुपम ने मुलाकात कर राज्यपाल से ईश्वरीय ज्ञान चर्चा की। संस्था की गतिविधियों से भी अवगत कराया गया। साथ ही राज्यपाल को 26 से 30 अगस्त तक ब्रह्माकुमारीज़ के मनमोहिनी वन परिसर में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय प्रशासक, कार्यपालक और प्रबन्धकों के सम्मेलन के लिए निमंत्रण दिया।

महिलाओं के उत्थान के लिए ब्रह्माकुमारीज़ अद्वितीय कार्य कर रही है: राज्यपाल

महिला सशक्तिकरण कार्य में हम सहयोग करने के लिए तत्पर रहें।

» शिव आमंत्रण, भोपाल, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के जोनल मुख्यालय राजयोग भवन में महिला प्रभाग द्वारा आयोजित महासम्मेलन में मप्र के राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने स्वर्णिम भारत का आधार: बेटी बचाओ-सशक्त बनाओ राज्य स्तरीय अभियान का शुभारंभ किया। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर देशव्यापी अभियान के तहत पूरे जोन यह अभियान चलाया जाएगा। महासम्मेलन में राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने कहा कि मैं वर्ष 1975 से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूं। मेरे घर से आधा किलोमीटर दूर ब्रह्माकुमारी आश्रम था। मैं वहां 45 वर्ष तक था। अब मेरा जहां घर है, वहां से भी आधा किलोमीटर दूर आश्रम है। हर रक्षाबंधन में मुझे ब्रह्माकुमारी बहनें राखी बांधती हैं। मैं ब्रह्माकुमारी मुख्यालय माउंट आबू में एक सम्मेलन में जा चुका हूं। आज के दिन मुझे 47 साल पुरानी यादें ताजा हो गईं। आज ब्रह्मा बाबा होते तो संस्था द्वारा नारी के प्रति किए कार्य को देख प्रसन्न होते। मूल्यों की अलख जगाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किया गया कार्य सराहनीय है। हमारी सोच ऐसी होनी चाहिए कि जहां भी महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य किया जाए उसमें हम सहयोग करने के लिए तत्पर रहें। हम प्रथम गुरु के रूप में माता को मानेंगे तभी श्रेष्ठ राष्ट्र का सपना साकार होगा। पिछड़े क्षेत्र की महिलाओं के उत्थान के लिए ब्रह्माकुमारीज़ अद्वितीय कार्य कर रही है। भोपाल जोन की निदेशिका बीके अवधेश ने अभियान के बारे में बताया। पूर्व मंत्री पीसी शर्मा, विस प्रमुख सचिव अवधेश प्रताप सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन बीके डॉ. रीना ने किया। राज्यपाल ने भोपाल में एक ही दिन में 108 किसान सम्मेलन करने वाले भाई-बहनों को सम्मानित किया।

लोगों की समस्याओं को सुनना और उनकी सेवा करना ही सबसे बड़ा पुण्य: राज्य आयुक्त

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। विशेष योजना आयोग के राज्य आयुक्त उमाशंकर शर्मा एक दिवसीय दौरे पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन पहुंचे। यहां उन्होंने संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों से मुलाकात की। साथ ही वे डायमंड हॉल में चल रहे आध्यात्मिक राजयोग ध्यान साधना शिविर में उपस्थित लोगों को सम्बोधित भी किया। उन्होंने कहा कि आज जरूरत है कि समस्याग्रस्त लोगों की समस्याओं को सुनना और उसका निराकरण करना। इससे लोगों का विश्वास जन प्रतिनिधियों के लिए बढ़ता है। परमात्मा ने हमें जीवन दूसरों की सेवा के लिए दिया है। बशर्ते हम उसी भाव से जीवन यापन करते हुए दूसरों के जीवन साथी का भागीदार बनें। मैं परमात्मा शिव का भक्त हूं जब भी कोई कर्म करता हूं तो यह जरूर सोचता हूं कि इसका प्रतिफल क्या होगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दुनियाभर में भारत की संस्कृति और सभ्यता का प्रचार-प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यहां परिसर में आने से ही जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होने लगता है। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजक बीके गीता ने राजयोग ध्यान का महत्व बताते हुए कहा कि यह मनुष्य के जीवन में सकारात्मक सुधार के लिए अनमोल औषधि है। इससे ही हमारा जीवन अच्छा हो सकता है। कार्यक्रम में बीके गीता बहन ने मुख्य तिथि भेंटकर सम्मालित किया। कार्यक्रम के पश्चात् उन्होंने शांतिवन का अवलोकन किया तथा ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव बीके निर्वैर से मुलाकात कर ईश्वरीय ज्ञान चर्चा की।

अपना अनुभव सुनाते उमाशंकर शर्मा तथा उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते बीके गीता।

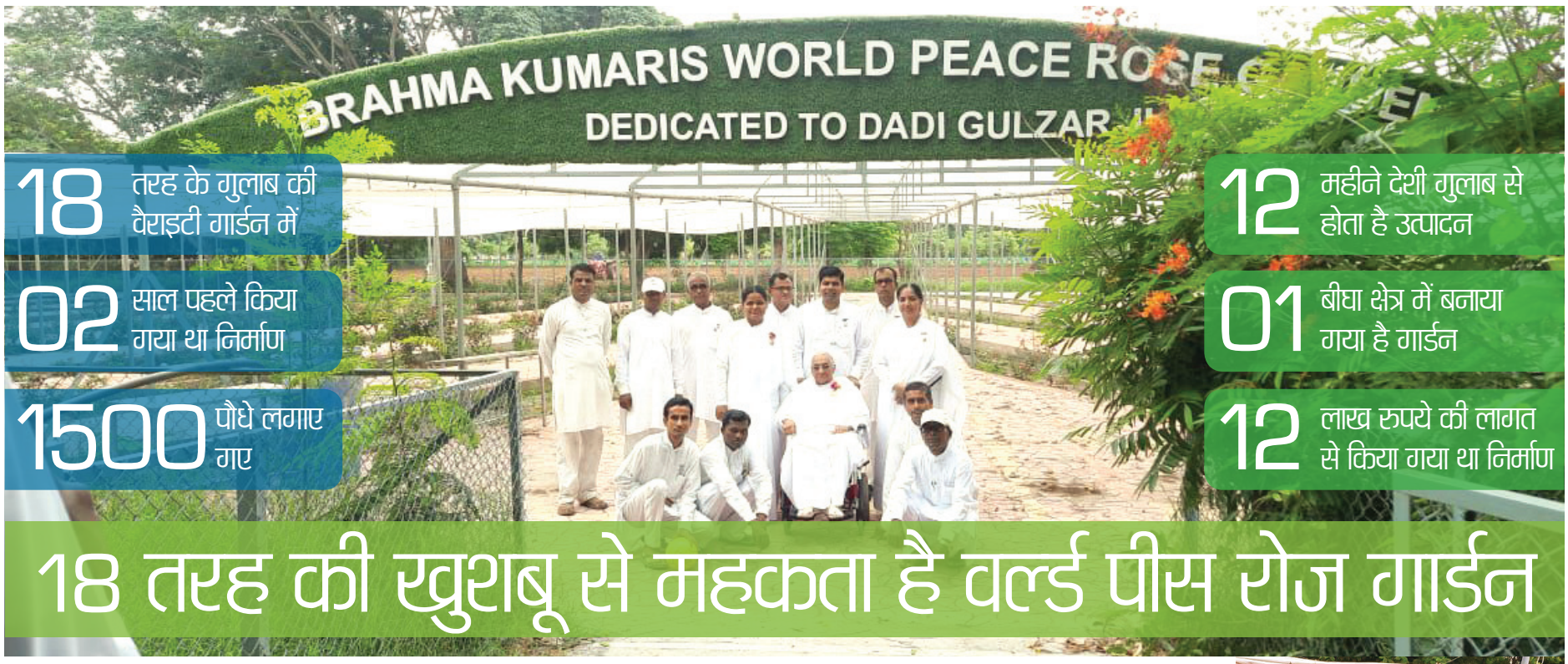

18 तरह की खुशबू से महकता है वर्ल्ड पीस रोज गार्डन

स्पेशल स्टोरी...

लोगों को गार्डन देखने के लिए पॉथवे का कराया निर्माण

» शिव आमंत्रण, आबू रोड (सिरोही/राजस्थान)। आबू रोड में एक अनोखा गार्डन है जो 18 तरह के गुलाब की खुशबू से महकता है। इसमें प्रवेश करते ही गुलाबों की महक से मन आनंदित हो उठता है। गार्डन में महकते लाल, पीले, गुलाबी, सफेद गुलाब के पौधे एक अलग ही अहसास कराते हैं। हम बात कर रहे हैं तपोवन परिसर में बने ब्रह्माकुमारीज़ वर्ल्ड पीस रोज गार्डन की। दो साल पहले वर्ष 2000 बने बने इस गार्डन में 1500 पौधे लगे हैं।

पुणे से लाए थे गुलाब के पौधे

रोज गार्डन को आकार देने वाले संचालक बीके लल्लन भाई ने बताया कि दो साल पहले रोज गार्डन की स्थापना के लिए पुणे स्थित नर्सरी से गुलाब के पौधे लाए थे। इनमें देशी और विदेशी दोनों तरह की गुलाब की वैराइटी हैं। देशी गुलाब से 12 महीने फूलों का उत्पादन होता है, वहीं विदेशी वैराइटी में सिर्फ वाइट, पिंक और कश्मीरी वैराइटी में ही सालभर फूल लगते हैं।

3000 फूल निकलते हैं हर माह

रोज गार्डन में लगे 1500 पौधों में हर माह 3000 फूलों निकलते हैं। जिनका बाजार मूल्य 25 हजार रुपये होता है। इन फूलों का उपयोग ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में होने वाले कार्यक्रमों, भोग और माला आदि में उपयोग किया जाता है। साथ ही बाद में इन मालाओं के सूखने पर खाद तैयार किया जाता है।

दो साल पहले 12 लाख से बनाया गया था गार्डन

दो साल पहले गार्डन की स्थापना में 12 लाख रुपए की लागत आई थी। इसमें गार्डन को बाहर से आने वाले लोगों को देखने के लिए पॉथवे का भी निर्माण किया गया है। साथ ही पॉथवे पर ऊपर नीली टाट्पट्टी लगाई गई है। फूलों को रोजाना पानी दिया जाता है।

जैविक खाद का करते हैं उपयोग

रोज गार्डन एक बीघा क्षेत्रफल में बनाया गया है। पौधों को रोजाना पानी दिया जाता है। सबसे बड़ी बात गार्डन में सिर्फ मौके पर तैयार किए गए जैविक खाद का ही इस्तेमाल किया जाता है। गार्डन के पास ही जैविक खाद बनाने के लिए प्लांट बनाया गया है। जिसमें पत्ते, लकडियां, घास और गोबर को एकत्रित करके देशी जैविक खाद तैयार किया जाता है।

दादी गुलजार की याद में किया गया है निर्माण

रोज गार्डन के संचालक बीके बीके लल्लन भाई ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी) की याद में गार्डन का निर्माण किया गया है। क्योंकि दादीजी का पूरा जीवन सादगी, पवित्रता और सरलता का मिसाल रहा। उन्हें फूलों से बहुत प्यार था। साथ ही दादीजी प्रकृति के बीच रहना और फूलों की सेवा करना पसंद करती थीं।

अमेरिका से आए रोजमैन से मिलकर मिली प्रेरणा

अमेरिका से एक बार एक रोजमैन भाई आए थे। उन्होंने दस दिन रहकर रोज गार्डन का डिजाइन तय करवाकर उसे पूरा कराया। साथ ही इसकी संभाल आदि को लेकर उन्होंने पूरा प्रशिक्षण दिया। इसके बाद इसका निर्माण किया गया।

25 हजार रुपये के गुलाब हर माह निकलते हैं

आज युवा पीढ़ी को नशे के चंगुल से बचाए रखना सबके लिए बड़ी चुनौती: सीएमएचओ

{ तंबाकू मुक्त राजस्थान सौ दिवसीय कार्ययोजना के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। निरोगी राजस्थान अभियान के तहत चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, सिरोही और ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा संयुक्त रूप से एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें जिलेभर के सेकंडरी और सीनियर सेकंडरी स्कूल के प्रधानाध्यापक, प्राचार्य, नर्सिंग कॉलेज के प्राचार्य, डॉक्टर और स्वास्थ्य विभाग के नोडल अधिकारियों ने भाग लिया। विषय विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को तंबाकू के सेवन से होने वाले शारीरिक और मानसिक दुष्प्रभाव, हानि आदि को लेकर जरूरी बातें बताईं।

जिला चिकित्सा एवं मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश कुमार ने कहा कि मुझे विश्वास है कि यहां से प्रशिक्षण लेने के बाद आप सभी शिक्षकगण इसे अपने-अपने स्कूलों में लागू करेंगे। आज भावी युवा पीढ़ी को नशे के चंगुल से बचाए रखना हम सभी के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। लेकिन हम सभी मिलकर प्रयास करेंगे तो इस चुनौती से आसानी से निपटा जा सकता है। नेशनल टोबेको कंट्रोल प्रोग्राम (एनटीसीपी) के स्टेट नोडल ऑफिसर डॉ. एसएन ढोलपुरिया ने कहा कि भारतभर में एक साल में तंबाकू के सेवन से 15 लाख लोगों की मौत हो जाती है। डेनमार्क एक ऐसा देश है जहां सभी तरह के तंबाकू उत्पादों पर सरकार ने प्रतिबंध लगाया है। यदि हमें मौतों के इन आंकड़ों को नियंत्रित या कम करना है तो सख्ती से कदम उठाने होंगे। मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव बीके डॉ. बनारसी लाल, जयपुर से आए डॉ. कार्तिक, एसआरकेपीएस के डायरेक्टर राजन चौधरी-

विशेषज्ञों ने तंबाकू छोडने के लिए दिए ये सुझाव-

- तंबाकू युक्त वस्तुओं का सेवन न करें।
- अपने पास मिश्री, सौंप या इलाइची रखें।
- सप्ताह में एक दिन से तंबाकू छोडने की शुरुआत करें। आगे धीरे-धीरे छोड़ते रहें।
- ऐसे लोगों से दोस्ती रखें जो आपकी आदत छुड़ाने में मदद करे।
- उन जगहों और लोगों से दूर रहें जो तंबाकू तलब की याद दिलाए।
- तलब लगने पर चार बातें याद रखें- तंबाकू के उपयोग में देर करें, लंबी सांसें लें, धीरे-धीरे पानी पीएं, अपना ध्यान किसी दूसरी ओर लगाएं।
- अपने रोजाना के कार्यक्रम में तब्दीली लाएं और सुबह सौर के लिए जाएं।
- अपना इरादा पक्का रखें।

संपादकीय

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

जाति, धर्म, रंग, रूप, भाषा भेद, रंग भेद पर दुनिया में भर में भेदभाव होता रहा है। यह तब था जब हमारे देश में विज्ञान का विकास नहीं था। आज हमारा देश विकासशील देशों की श्रेणी में सबसे अगली पंक्ति पर है। ऐसे में यदि हमारे देश में सांप्रदायिक दंगा हो जाए तो यह अजूबा से कम नहीं होता है। हम उस देश के वासी है जहां गंगा, यमुना की तहजीब देखने को मिलती है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता दोनों ही हमेशा एक-दूसरे को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती हैं। हम सब एक परमात्मा की संतान हैं। परमात्मा जैसे इस शरीर की दुनिया से अलग धाम और अलग रूप रंग में होता है। ठीक वैसे ही सभी मनुष्यों के अंदर व्याप्त आत्माएं भी एक ही हैं। एक रूप, एक रंग और एक ही गुण धर्म की हैं, इसलिए मजहब और शरीर का धर्म अलग-अलग है। इसका मतलब यह नहीं कि हम सब अलग अलग हैं, बल्कि परमात्मा ने हम सभी को एक जैसे ही बनाया है। इसलिए हम मिलकर ही एक नये समाज का विकास कर सकते हैं। परमात्माा एक हैं और हम सभी आत्माएं उनकी संतान हैं, इसलिए हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई-भाई हैं। सभी आत्मिक नाते हैं भाई-भाई हैं। मिलजुकर साथ प्रेम से रहने की हमारी संस्कृति रही है। यही कारण है कि देश और दुनिया को वसुधैव कुटुम्बकम् का महान संदेश सिर्फ भारत से ही दिया गया है।

बोध कथा/जीवन की सीख

किसी पर जल्दी नहीं करें भरोसा

एक बार एक शिकारी जंगल में शिकार करने के लिए गया। बहुत प्रयास करने के बाद उसने जाल में एक बाज पकड़ लिया। शिकारी जब बाज को लेकर जाने लगा तब रास्ते में बाज ने शिकारी से कहा, तुम मुझे लेकर क्यों जा रहे हो? शिकारी बोला, मैं तुहें मारकर खाने के लिए ले जा रहा हूं। बाज ने सोचा कि अब तो मेरी मृत्यु निश्चित है। वह कुछ देर यूं ही शांत रहा और फिर कुछ सोचकर बोला- देखो, मुझे जितना जीवन जीना था मैंने जी लिया और अब मेरा मरना निश्चित है, लेकिन मरने से पहले मेरी एक आखिरी इच्छा है। बताओ अपनी इच्छा? शिकारी ने उत्सुकता से पूछा। बाज ने बताना शुरू किया- मरने से पहले मैं तुम्हें दो सीख देना चाहता हूं, इसे तुम ध्यान से सुनना और सदा याद रखना। पहली सीख तो यह कि किसी कि बातों का बिना प्रमाण, बिना सोचे-समझे विश्वास मत करना। दूसरी ये कि यदि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो या तुम्हारे हाथ से कुछ छूट जाए तो उसके लिए कभी दुःखी मत होना। शिकारी ने बाज की बात सुनी और अपने रास्ते आगे बढ़ने लगा। कुछ समय बाद बाज ने शिकारी से कहा-शिकारी, एक बात बताओ, अगर मैं तुहें कुछ ऐसा दे दूं जिससे तुम रातों-रात अमीर बन जाओ तो क्या तुम मुझे आजाद कर दोगे? शिकारी फौरन रुका और बोला, क्या है वो चीज, जल्दी बताओ? बाज बोला, दरअसल, बहुत पहले मुझे राजमहल के करीब एक हीरा मिला था, जिसे उठा कर मैंने एक गुप्त स्थान पर रख दिया था। अगर आज मैं मर जाऊंगा तो वो हीरा ऐसे ही बेकार चला जाएगा, इसलिए मैंने सोचा कि अगर तुम उसके बदले मुझे छोड़ दो तो मेरी जान भी बच जाएगी और तुम्हारी गरीबी भी हमेशा के लिए मिट जाएगी। यह सुनते ही शिकारी ने बिना कुछ सोचे-समझे बाज को आजाद कर दिया और वो हीरा लाने को कहा। बाज तुरंत उड़ कर पेड़ की एक ऊंची शाखा पर जा बैठा और बोला- कुछ देर पहले ही मैंने तुम्हें एक सीख दी थी कि किसी के भी बातों का तुरंत विश्वास मत करना लेकिन तुमने उस सीख का पालन नहीं किया। दरअसल, मेरे पास कोई हीरा नहीं है और अब मैं आजाद हूं। यह सुनते ही शिकारी मायूस हो पछताने लगा, तभी बाज फिर बोला, तुम मेरी दूसरी सीख भूल गए कि अगर कुछ तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो तो उसके लिए तुम कभी पछतावा मत करना।

संदेशः हमें किसी अनजान व्यक्ति पर आसानी से विश्वास नहीं करना चाहिए और किसी प्रकार का नुकसान होने या असफलता मिलने पर दुःखी नहीं होना चाहिए। बल्कि उस बात से सीख लेकर भविष्य में सतर्क रहना चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज़ के ऑर्गेनिक फॉर्मिंग से प्रभावित हूं

मेरी कलम से...

पुरुषोत्तम रूपाला
राज्यसभा सांसद, अमरेली, गुजरात

सभी लोगों के मन में एक भाव खड़ा किया गया है कि मैं अपने देश को आत्मनिर्भर कैसे बनाऊं?

ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनों को हमारा ओमशांति। आप सभी दिव्यधाम माउंट आबू से कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर किसान भारत को बनाना चाहते हैं। सबके आत्मनिर्भर का आधार कृषि ही होगा। इस महत्वपूर्ण विषय को लेकर सेमिनार आपलोग करते ही रहते हैं।

> मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि आज भारत की आबादी लगभग 130 करोड़ है फिर भी अनाज सहित कई मामले में भारत आत्मनिर्भर है। इतना ही नहीं भारत अन्य देशों के पेट का भी पालन कर सकता है।

इसके लिए मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आत्मनिर्भर शब्द का प्रधानमंत्री मोदी ने लॉकडाउन के समय प्रयोग किया। इससे पूरे देशवासियों के दिल में एक झनझनाहट सी पैदा हो गई। सभी लोगों के मन में एक भाव खड़ा किया गया है कि मैं अपने देश को आत्मनिर्भर कैसे बनाऊं। हर क्षेत्र में, देश का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं होना चाहिए जिस पर भारत को दुनिया पर निर्भर रहना चाहिए, ये इसका मूल मंत्र है। इस विषय को लेकर जब आप सब बीके भाई-बहनें इकट्ठा होकर चर्चा करने जा रहे हैं तब इस मंगल अवसर को मैं शुभकामनाएं देता हूं। आत्मनिर्भर भारत तभी बनेगा जब भारत का कृषि क्षेत्र आत्मनिर्भर बनेगा।

आप सब जानते हैं कि जब इस देश की आबादी 50 करोड़ की थी, तब भी देश की जनता को भर पेट खाने के लिए अनाज आपूर्ति पर्याप्त मात्रा में नहीं उपलब्ध थी। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि आज भारत की आबादी लगभग 130 करोड़ है फिर भी अनाज सहित कई मामले में भारत आत्मनिर्भर है। इतना ही नहीं भारत अन्य देशों के पेट का भी पालन कर सकता है। उस मुकाम पर पहुंचने के लिए मैं देश के किसानों को बधाई देता हूं। आप सब लोग सभी को जो मार्गदर्शन दे रहे हैं जो भारत सरकार के ऑर्गेनिक फॉर्मिंग से भी एक कदम आगे है। आप सभी जो सेमिनार कर रहे हैं उसकी सफलता देश के किसानों को लंबे अरसे तक मार्गदर्शन करती रहेगी।

आत्मिक कल्याणकारी स्थिति द्वारा श्रेष्ठ जीवन की उपलब्धि

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 48

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

श्रेष्ठ जीवन हेतु आत्म कल्याण की उच्चता

आत्म कल्याण के उच्चतम स्वरुप की पवित्र अभिलाषा का व्यावहारिक प्रयोग जीवन में अंतर्मन के श्रेष्ठ संकल्प एवं श्रेष्ठ विकल्प की उत्पति और उनकी विधिवत पालना का महत्वपूर्ण आधार होता है। श्रेष्ठ जीवन की परिकल्पना से सम्बद्ध स्वरुप जब यथार्थ बोधगम्यता की स्थिति में परिवर्तित होते हैं तब पुरुषार्थ की गतिशीलता द्वारा श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर एवं श्रेष्ठतम की क्रमबद्धता का समावेश सुनिश्चित हो जाता है। निज व्यक्तित्व में आत्मिक कल्याणकारी अनुभूतिगत स्थिति स्वयं को सदा सजगतासे समृद्धशाली स्वरुप में ढालने हेतु सिद्धहस्त होती है क्योंकि इसके परिदृश्य में श्रेष्ठ जीवन के उपलब्धिपूर्ण रहस्य सम्मिलित रहते हैं। जीवन में उत्तम स्थितियों के प्रति व्यक्तिगत रूप से व्यावहारिक निष्ठा की अभिव्यक्त सम्मति, जीवंत जागृति का प्रमाण है जिसमें जीवात्मा ने श्रेष्ठता से ओत-प्रोत मौलिक गुणों एवं शक्तियों को नैसर्गिक स्वरुप में स्थापित करने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। स्व कल्याण की पवित्र अवधारणा ही सर्व मानव आत्माओं के उद्धार का मूलभूत स्रोत है जो व्यक्ति को अनवरत श्रेष्ठ विकल्प के रूप में नवीन मार्ग प्रशस्त करने की विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करता है।

जीवन की उत्तम स्थिति में निष्ठापूर्ण अभिव्यक्ति

चेतना की उच्चता को सदा बनाए रखने हेतु प्रबल पुरुषार्थ का मनोगत स्वयं के गरिमामयी स्वरुप को जब स्वीकार कर लेता है तब जीवन की उत्तम स्थिति में निष्ठापूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्फुटित हो जाती है। आत्महित की कल्याणकारी स्थिति में स्थित होना नैसर्गिक रूप से आत्मगत स्वमान, स्वरुप एवं स्वभाव की दिशा में अभिमुखित हो जाने की उच्चता का मौन साधना स्वरुप है जिसमें जीवन की समग्रता का सूत्र विद्यमान रहता है। जीवन में अनहद नाद का शंखनाद आत्मा की सूक्ष्म यात्रा को मंगलकारी बनाता है जो अलौकिक जीवन के आनंद से आत्मा को सराबोर कर देता है। आत्म जगत की उच्च अवस्था से सम्बद्ध अनुभूतियां व्यक्ति को यह स्मृति प्रदान कराती हैं कि किसी भी परिस्थिति में आत्मा श्रेष्ठता के प्रति आस्थावान रहती है क्योंकि यही उसका मूलभूत गुण-धर्म है जो उसे ईश्वरीय सत्ता के सानिध्य में बनाए रखता है। संकल्प शक्ति द्वारा उत्तम स्थिति के प्रति श्रद्धा एवं आस्था के साथ गतिशील होना, आत्मा के श्रेष्ठ प्रालब्ध का सुखद परिणाम है जो व्यक्ति को आत्मगत उच्चता के प्रति सदा निष्ठावान रहने की प्रेरणा प्रदान करता है।

आत्मगत उच्च अवस्था की श्रेष्ठतम अनुभूतिगत परिणिति

जीवन में श्रेष्ठतम अनुभूति के परिणाम तक पहुंचने हेतु आत्मगत उच्च अवस्था के प्रति गहन पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है जिससे मुक्ति एवं जीवन मुक्ति की आत्मगत स्वतंत्रता अनवरत बनी रहती है। आत्मानुभूति का विराट परिदृश्य सदा ही शुद्ध, बुद्ध और मुक्त स्वरुप की उच्च अवस्था के सानिध्य में गतिमान होता है जो आत्मिक स्वरुप से एकरस रहते हुए अलौकिक परिवेश में विचरण करने की स्थिति में समाहित रहता है। व्यावहारिक दृष्टि एवं दृष्टिकोण में पवित्रता का प्रायोगिक अनुष्ठान व्यक्तित्व के गरिमामयी स्वरुप का आधार होता है जिसमें श्रेष्ठ संकल्प और विकल्प की उच्चता सदैव बनी रहती है।

> धार्मिक वृत्ति बनाए रखने वाला व्यक्ति कभी दुःखी नहीं हो सकता और धार्मिक वृत्ति को खोने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता।

- आचार्य तुलसीदास

> जिस प्रकार जब सूरज निकलता है तब लालिमा युक्त होता है और अस्त होता है तो भी लालिमायुक्त होता है। इसी प्रकार महान पुरुष भी सुख और दुःख में एकरूपता रखता है।

महाकवि कालीदास

गुरुग्राम से शुभारंभ] आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के तहत देशभर में चलाया जाएगा अभियान

सुसंस्कारों की धरोहर भारत की बेटियां राष्ट्रीय अभियान का जोरदार आगाज

अभियान की ब्रांड एंबेसेडर बॉलीवुड अभिनेत्री शहनाज गिल और केंद्रीय आयुष, महिला एवं बाल विकास मंत्री डॉ. महेंद्र मुंजापारा, मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा ने किया शुभारंभ

3000+
लोग कार्यक्रम में रहे मौजूद

800+
कार्यक्रम करने का रखा लक्ष्य

अभियान की लांचिंग के दौरान मौजूद ब्रांड एंबेसेडर बॉलीवुड अभिनेत्री शहनाज गिल और केंद्रीय आयुष, महिला एवं बाल विकास मंत्री डॉ. महेंद्र मुंजापारा, मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, शीला काकड़े व अन्य।

1500+
स्कूली छात्राओं ने लिया कार्यक्रम में भाग

10-15
वर्ष की बालिकाओं को दिया जाएगा प्रशिक्षण

» शिव आमंत्रण, ओआरसी (गुरुग्राम)। बिचारी नहीं शक्ति का अवतार हैं बेटियां... का संदेश देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के ओम शांति भवन रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम में सुसंस्कारों की धरोहर भारत की बेटियां राष्ट्रीय अभियान का जोरदार आगाज किया गया। शनिवार को दादी प्रकाशमणि ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों ने हरी झंडी दिखाकर अभियान का शुभारंभ किया। अभियान की ब्रांड एंबेसेडर बॉलीवुड अभिनेत्री शहनाज गिल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर मेरी जिंदगी बदल गई। यहां से जुड़ने के बाद मुझे सच्चा ज्ञान मिला। अब तो परमात्मा मेरे बेस्ट फ्रेंड हैं। मैं इस अभियान की नहीं भगवान की, परमात्मा की ब्रांड एंबेसेडर हूं। मुझे यहां परमात्मा ने भेजा है। मुझे परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाना है। यहां सिखाए जा रहे राजयोग मेडिटेशन की प्रैक्टिस से मेरे थॉट्स बदल गए। केंद्रीय आयुष, महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री डॉ. महेंद्र मुंजापारा ने कहा कि प्रधानमंत्रीजी ने अमृत महोत्सव और बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के माध्यम से बेटियों को सपनों को नए पंख लगाए हैं। आज बेटियों को आगे बढ़ने की पूरी आजादी है। इस अभियान को बेटियों का जीवन बदलने, उन्हें मूल्यशिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा देने में महत्वपूर्ण साबित होगा। अभियान के माध्यम से 10 से 15 साल की बेटियों को एम्पावरमेंट किया जाएगा।

संस्कारों के लिए मिले प्राइज...

मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने कहा कि सफलता अर्थात् श्रेष्ठ संस्कार। एम्पॉवरमेंट अर्थात् आत्मा का एम्पॉवरमेंट करना। हमारे संस्कार से संसार बनता है। हर स्कूल में संस्कारों के लिए प्राइज मिलना चाहिए। तभी समाज संस्कारों की वैल्यु करेगा और हर एक इसे महत्व देगा। जब हमारा लक्ष्य बन जाएगा कि मुझे दिव्य आत्मा बनना है, मुझे महान आत्मा बनना है तो हर एक बच्चा महान बन जाएगा। माता-पिता बच्चों की परवरिश में बच्चों के संस्कारों को डवलप करने, उन्हें धारण करने और श्रेष्ठ बनाने पर जोर दें। उन्होंने बच्चों से आह्वान किया कि आज सभी संकल्प करें कि जरूरत पर ही मोबाइल का इस्तेमाल करेंगे और सीखने वाली चीजें के लिए ही टीवी का इस्तेमाल करेंगे। सभी बच्चों सुबह उठकर सबसे पहले परमात्मा को गुडमार्निंग करें और रोज कम से कम 5-10 मिनट परमात्मा को याद जरूर करें।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक कारपोरेशन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट की जाइंट डायरेक्टर पारुल श्रीवास्तव, अखिल भारतीय महिला सम्मलेन की अध्यक्ष शीला काकड़े, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, महिला प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके चक्रधारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। थीम सांग सुसंस्कारों की धरोहर हैं भारतवर्ष की बेटियां बॉलीवुड गायक रविंद्र श्रीवास्तव ने प्रस्तुत कर लांच किया। इसे वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सपना ने लिखा है। इसमें साधना सरगम ने भी अपनी आवाज दी है। गिटार, हारमोनियम के साथ कुमारी हंशध्वनि, शिवरंजनी, तेजस्वी सोढ़ी ने ये मत कहो खुदा से मेरी मुश्किलें बड़ी हैं गीत की जोरदार प्रस्तुति दी। वहीं कुमारी वर्णिका और कुमारी आभा ने सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दी।

दिसंबर 2022 में होगा समापन-

बीके विधात्री बहन ने बताया कि सुसंस्कारों की धरोहर भारत की बेटियां राष्ट्रीय अभियान के तहत बालिकाओं के संपूर्ण विकास के लिए शिक्षा प्रदान की जाएगी। साथ ही बेटियों की काउंसलिंग करके उन्हें राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनाया जाएगा। व्यक्तित्व का विकास, जीवन मूल्य, पवित्रता की शक्ति, भय को कैसे दूर करें आदि विषयों पर शिक्षित-प्रशिक्षित किया जाएगा। सेल्फ अवेयरनेस, रिस्पांसविलिटी, यूनिटी, पीस, हार्मनी आदि विषयों पर बालिकाओं को शिक्षित किया जाएगा। समापन दिसंबर 2022 में किया जाएगा।

दिन-रात सेवारत 75 नर्सों का किया सम्मान

मेडिकल प्रभाग और ग्लोबल अस्पताल का संयुक्त आयोजन

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। आप सब नर्सों को बधाई जो इस साहसिक पेशा को चुना। नर्स मां और चिकित्सक की तरह होती है। जो मरीज को हर वक्त राहत देने का प्रयास करती है। नर्स की एक मुस्कान से मरीज की मुस्कान आ जाती है। इसलिए यह जरूरी है कि नर्सों को अपने इस व्यवसाय के बजाए सेवा का भाव रखें। यह बात गीतांजलि नर्सिंग कॉलेज उदयपुर की डीन डॉ. संध्या घाई ने कही। वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर आयोजित नर्सों के सम्मेलन में संबोधित कर रही थीं। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के तहत आयोजित कार्यक्रम में 75 नर्सों को सम्मानित किया गया। जीबी पंत हॉस्पिटल दिल्ली के कार्डियोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. मोहित गुप्ता ने कहा कि राजयोग ध्यान एक संजीवनी की तरह है। कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, ग्लोबल हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. प्रताप मिड्ढा, मेडिकल प्रभाग के कार्यकारी सचिव बीके बनारसी लाल ने भी संबोधित किया। शशिबाला गुप्ता, प्रिन्सिपल एसएलएम ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज आबूरोड ने आभार माना।

प्रदेशभर में जिला स्तर पर हुए नशामुक्ति कार्यक्रम

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर प्रदेशभर के जिला मुख्यालयों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान कार्यक्रम में लोगों को जीवन में कभी भी तंबाकू का सेवन नहीं करने, दूसरों को भी इसकी लत से छुड़ाने के लिए संकल्प दिलाया गया। साथ ही लोगों को तंबाकू सेवन से होने वाली गंभीर बीमारियों के बारे में रुबरु कराया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी तंबाकू निषेध सप्ताह मनाया गया। शांतिवन के डॉयमंड हॉल परिसर में लोगों को तंबाकू के दुष्परिणाम बताए के लिए संकल्प कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान मौजूद लोगों को

विश्व तंबाकू निषेध दिवस: राजस्थान सरकार और ब्रह्माकुमारीज़ का संयुक्त आयोजन

मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव डॉ. बनारसी लाल ने संकल्प कराया कि जीवन में कभी भी किसी भी तरह के नशे से दूर रहेंगे। इसके साथ ही अन्य लोगों को भी नशामुक्ति और तंबाकू के सेवन से होने वाले दुष्परिणाम बताएंगे, उन्हें जागरूक करके इस लत से छुड़ाएंगे। उन्हें राजयोग जीवन पद्धति के प्रयोग द्वारा व्यसन मुक्त करके तंबाकू मुक्त समाज का निर्माण करेंगे। इस मौके पर बीके रवि, बीके मनीषा, बीके बाबू लाल सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

ऐसी महान आत्मा बनो जो हरेक का सिर आपके आगे झुक जाये

दीक्षांत समारोह भारत सहित कई देशों के विद्यार्थी शामिल, रैली से दिया संदेश

भारत की शिक्षा दुनियाभर में आज भी लोकप्रिय: वटाना

शिव आमंत्रण, आबू रोड। आध्यात्मिक और मूल्य शिक्षा की पूरी दुनिया को जरूरत है। भारत की शिक्षा में व्यक्तिगत, पारिवारिक से लेकर सामाजिक व्यवस्थाओं का महत्वपूर्ण तत्व है। इसलिए इस शिक्षा के लिए दुनियाभर के लोग भारत की ओर देख रहे हैं।

यह बात थाईलैंड से आये सुप्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ. एटिकन वटाना ने कही। वे ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में अन्नामलाई, यशवंतराव तथा महाराणा प्रताप कोटा यूनिवर्सिटी के मूल्य आधारित शिक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों के दीक्षांत

समारोह में संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति और सभ्यता आज भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। करूणा, दया और मानवता का मूल्य मनुष्य को श्रेष्ठ बनाता है। मैंने वहां की शिक्षा में भी यहां के मूल्य आधारित शिक्षा के लिए प्रेरित किया है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का शिक्षा प्रभाग यहां की शिक्षा को थाईलैण्ड में भी स्थापित कर रहा है। यह खुशी का अवसर पर है। यहां आने के बाद परमात्म शक्ति की अनुभूति होती है। इसे प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी ने कहा कि कम बोलो, धीरे बोलो और मीठा बोलो का ही सिद्धांत जीवन में अपना ले तो जीवन अच्छा बनने लगता है। यही मनुष्य की शोभा है। शिक्षा का मतलब ही होता है कि जीवन में श्रेष्ठता आये। मुझे खुशी है कि जितना लोग इसे पढ़ेंगे उतना ही उनका जीवन बनेगा।

पद्मश्री विजेता सोमा पोपेरे ने दादी से की मुलाकात

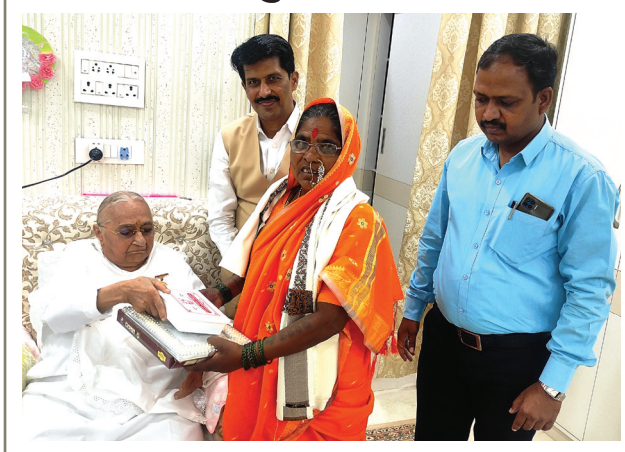

शिव आमंत्रण, आबू रोड। बीबीसी द्वारा विश्व की 100 शक्तिशाली महिलाओं में शामिल रहीं बाई सोमा पोपेरे जो सीड मदर के नाम से भी जानी जाती हैं, एक भारतीय महिला किसान और संरक्षणवादी हैं। इन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी से मुलाकात की। ये 2019 में राष्ट्रपति के हाथों पद्मश्री से और 2018 में राष्ट्रपति के हाथों नारी शक्ति पुरस्कार से नवाजी गई हैं। साथ में बीके दीपक हरके तथा बीएफ के विभागीय अधिकारी जितिन साठे उपस्थित थे।

परिवार को नारी ही संजोती है गृह लक्ष्मी के रूप में फिर चाहे सास हो या बहू: बीके आदर्श

ग्वालियर मप्र। ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग द्वारा आयोजित 4 दिवसीय मेडिटेशन शिविर के द्वितीय दिवस का कार्यक्रम सेवाकेंद्र प्रभु उपहार भवन माधौगंज में सम्पन्न हुआ। लगभग 500 से भी अधिक भाई-बहनें उपस्थित रहे। इसमें मुख्य रूप से बीके गीता (भीनमाल), ब्रह्माकुमारीज़ लश्कर ग्वालियर की मुख्य इंचार्ज बीके आदर्श, बीके ज्योति, बीके प्रहलाद, जान्हवी रोहिरा, आशा सिंह (समाज सेविका) उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में बीके आदर्श ने कहा कि परिवार को नारी ही संजोती है गृह लक्ष्मी के रूप में फिर चाहे सास हो या बहू। लेकिन जब दोनों में सामंजस्य नहीं होता तो वही घर मंदिर की जगह केवल ईट पत्थर का मकान रह जाता है। जहां सुकून मिलना चाहिए वहीं से विरक्ति होने लगती है और घर टूटने लगते हैं। लोग अब संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार लेते जा रहे है और यह क्रम यहीं नहीं रुकता बच्चे और माता पिता भी एकाकी जीवन जी रहे है अतः हमें अपनी उसी भारतीय परंपरा में आना होगा घर को फिर से मंदिर जैसा बनाना होगा।

राजस्थान के भीनमाल से पधारीं बीके गीता ने कहा कि घर वह स्थान है जहां देवी देवता रहते हैं और उस स्थान को मंदिर कहते हैं। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि जिस तरह समुद्र मंथन के बाद बहुमूल्य वस्तुओं के साथ विष और अमृत निकला था। उसी प्रकार जीवन भी समुद्र मंथन की तरह है जिसमें विष अमृत दोनों ही है। विष रूपी कई जहरीली बातों को हमें पचाना पड़ता है तब जीवन में अमृत की प्राप्ती होती है और जीवन सुखमय होता है। घर की लक्ष्मी नारी है उसका लक्ष्य है घर को सुखमय बनाना उसका प्रतीक है महालक्ष्मी पूजा।

आज स्त्री समाज में अपनी हर जिम्मेदारियां निभाती है: बीके गीता

शिव आमंत्रण, भीनमाल/राज.। ब्रह्माकुमारीज राजयोग केंद्र भीनमाल द्वारा महिला प्रभाग के तत्वाधान में अग्रवाल धर्मशाला में मातृ दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कवयित्री, शिक्षिका राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय श्रीमती प्रतिभा शर्मा भीनमाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। साथ ही महिला एवं बाल विकास विभाग से श्रीमती लता आचार्य भीनमाल अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन द्वारा की गई। बीके सुमन बहन ने एक सुंदर गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात प्रतिभा शर्मा जी ने मातृ दिवस पर एक सुंदर कविता नारी तू नालाक्ष्मी सुनाई और सभी मातृ शक्तियों को मातृ दिवस की शुभकामनाएं दी। ब्रह्माकुमारी गीता ने सभी मातृ शक्तियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज एक स्त्री समाज में अपनी हर प्रकार की जिम्मेदारियां निभाती है। और उसमें अहम भूमिका होती है एक मां की मां के रूप में वह अपने बच्चों के ऊपर अच्छे संस्कार डालती है। उन्होंने बताया जिम्मेदारियां निभाते-निभाते कभी वह हताश हो जाती हैं, निराश हो जाती हैं तो ऐसे समय पर आवश्यकता है मेडिटेशन की।

कार्यक्रम] रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ समर कैम्प का समापन...

जो कर्म मैं करूंगी मुझे देख अन्य करेंगे: बीके कमला

- एकाग्रता विकसित करने में राजयोग साधना सहायक सिद्ध होगा।

शिव आमंत्रण, रायपुर/छग : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित प्रेरणा समर कैम्प का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यकम के साथ समापन हुआ। समापन समारोह में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक प्रदीप गुप्ता, एडीशनल कलेक्टर उज्जवल पोरवाल और क्षेत्रीय निदेशिका बीके कमला दीदी ने विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक प्रदीप गुप्ता ने समर कैम्प आयाजित करने के लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान समय इसकी बहुत अधिक आवश्यकता है। बच्चों में अच्छे गुणों और संस्कारों का बीज बोने का यह सही समय है। इस समय उनके अन्दर

कार्यक्रम को संबोधित करते बीके कमला व मंचासीन अन्य अतिथि।

लचीलापन होता है। सच्चे अर्थों में व्यक्तित्व का निर्माण और जीवन को दिशा देने का काम इसी अवधि में हो सकता है। हम जैसा बनना चाहें वैसा अपने को बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि आजकल सोशल मीडिया में बच्चे अपना कीमती समय नष्ट कर रहे हैं। अभिभावक और शिक्षक चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रहे हैं। एडीशनल कलेक्टर उज्जवल पोरवाल ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बच्चों के चारित्रिक विकास में समर कैम्प मददगार बनेगा। उन्हें एकाग्रता विकसित करने में राजयोग साधना सहायक सिद्ध होगा। योग हमें कर्म कुशल बनाता है। ब्रह्माकुमारी स्मृति दीदी ने भी सम्बोधित किया। कु.नीलम साहू ने बताया कि वह तीसरी कक्षा में थी तब से यहां के समर कैम्प में भाग ले रही है। राजयोग साधना से से इस वर्ष दसवीं बोर्ड में उसने 94% अंक हासिल किए हैं।

आत्म निर्भर किसान से ही भारत बनेगा स्वर्णिम

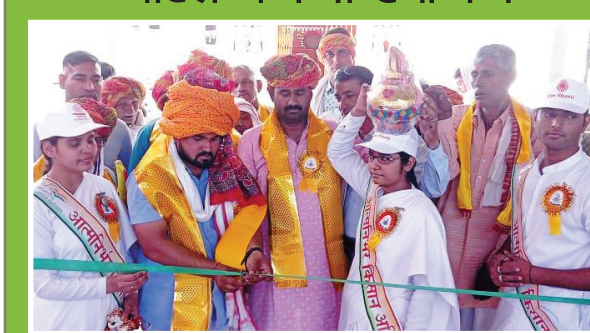

शिव आमंत्रण, वैर (भरतपुर/राजस्थान)। स्वर्णिम भारत की पहचान आत्म निर्भर किसान कार्यक्रम अभियान का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए सरपंच दीपेश कुमार, हलेना उपतहसील, अभियान नेत्री बीके गीता, अभियान यात्री बीके संस्कृति, बीके करण, कुमार अंशु, कुमारी तनु।

सम्मेलन स्पार्क प्रभाग की ओर से तीन दिवसीय सम्मेलन आयोजित

देशभर से आए 17 पद्मश्री विभूतियों का किया सम्मान

126 साल के स्वामी शिवानंद विशेष रूप से पधारे

कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से मोहा मन

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन में स्पार्क प्रभाग की ओर से तीन दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से पधारे पद्मश्री प्राप्त हस्तियों का संस्थान की ओर से मुकुट, शॉल, स्मृति चिह्न और माला पहनाकर किया गया। सिंगर अनिता पंडित ने अपने स्वरों का जादू बिखेरा वहीं कलाकारों ने सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सम्मेलन में आए पद्मश्री प्राप्त महानुभावों ने एक स्वर में कहा कि नए भारत के निर्माण में आध्यात्मिकता का योगदान सबसे अहम है। समापन पर आईएनएमएस डीआरडीओ के वैज्ञानिक सुशील चंद्रा ने कहा कि विज्ञान और आध्यात्म दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए साइलेंस और साइंस दोनों ही मिलते-जुलते हैं। जब हमें कोई शोध करना होता है तो उसके लिए साइलेंस की जरूरत होती है। इस साइलेंस की शक्ति से ही आंतरिक शक्ति मिलती है। आज विज्ञान से साधन तो बढ़ रहे हैं, लेकिन उसमें आध्यात्मिकता की कमी के कारण तमाम तरह की परेशानियां पनप जाती हैं। यदि दैनिक जीवन में आध्यात्म का उपयोग हो तो हर चीज सुखदायी हो जाती है। राजयोग ध्यान से जीवन श्रेष्ठ बन जाता है। पंजाब यूनिवर्सिटी के वॉइस चांसलर प्रो. राजकुमार ने कहा कि शिक्षा, आध्यात्म और विज्ञान तीनों ही मनुष्य के सामाजिक जीवन के लिए जरूरी हैं। राजयोग ध्यान से ही जीवन में बदलाव आता है। यहां आने से यह पता पड़ता है कि आध्यात्म और राजयोग से सबकुछ बदल सकता है। प्रभाग की अध्यक्षा बीके अंबिका ने कहा कि आध्यात्म के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। राजयोग ध्यान से व्यक्ति का मन अन्दर से बदल जाता है। मन में आने वाला प्रत्येक नकारात्मक विचार हमारी मनोवृत्ति को बदल देता है। इसलिए जीवन में नकारात्मकता को स्थान नहीं देना चाहिए। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, कार्यकारी बीके मृत्युंजय, राष्ट्रीय संयोजक बीके श्रीकांत, मुख्यालय संयोजक बीके संजय, बीके सरोज, बीके अल्का समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। सम्मेलन के समापन पर रंगारंग प्रस्तुतियों ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पदमश्री से सम्मानित ये विभूतियां पहुंचीं

इंडियन बायोफिजिकल वैज्ञानिक कर्नाटक प्रो. रामकृष्णा विजया, कर्नाटक से माधुरी बर्थवाल, राजस्थान से श्याम सुन्दर पालीवाल, हिम्मत राम भाम्बू, गुलाब सपेरा, उस्ताद अनवर मंगानियार, ऊषा चौहान, सुन्दरराम वर्मा, यूपी से एडवोकेट रोमेश गौतम, उस्ताद गुलफाम अहमद, गुजरात से जगदीश पारीख, गेनाभाई दरगाभाई पटेल, महाराष्ट्र से राव सालुबा बावस्कर, ओड़िसा से केपी साबरमती, बिहार से जगदीश प्रसाद सिंह और हिमाचल प्रदेश से विद्यानंदा सारीक शामिल हुए।

मानवता की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म, इससे जीवन में मिलता है सुखः शिवानंद स्वामी

कार्यक्रम वाराणसी से पधारे 126 साल के योगगुरु स्वामी शिवानंद ने कहा कि यदि मनुष्य जीवन में संयम और नियम हो तो वह अपनी मृत्यु पर भी विजय पा सकता है। योग और नियम दोनों ही मनुष्य के लिए ऑक्सीजन की तरह काम करते हैं। इच्छाएं मनुष्य को कमजोर करती हैं। यदि मनुष्य की इच्छाएं समाप्त हो जाएं तो उसके जीवन में प्रकाश आ जाएगा। भारत की संस्कृति और सभ्यता दुनिया में सभी संस्कृतियों में श्रेष्ठ है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का राजयोग ध्यान यदि हमारे जीवन का हिस्सा बने तो हम सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

भारत में किसानी करना हमारी शान है

आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान कार्यक्रम

शिव आमंत्रण, कामठी, महाराष्ट्र। आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में किसानों में जागृति लाने हेतु आत्मनिर्भर किसान स्वर्णिम भारत के पहचान यह अभियान निकाला गया, जो पूरा एक मास गांव-गांव में जाकर सेवा करते हुए कामठी के तारसा गांव में अभियान समाप्ति का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें विशाल शोभायात्रा निकालकर पूरे गांव में संदेश दिया।

कृषि एवं पशु संवर्धन सभापति जिला परिषद नागपुर के तापेश्वर वैद्य ने कहा कि वर्तमान समय किसानों को श्रेष्ठ दिशा दिखाकर पौष्टिक अन्न का निर्माण करना और कराना समय की मांग है। कम से कम हम जो अनाज उगाते हैं वह सेंद्रीय तरीके से उगाएंगे, यह जो कार्य ब्रह्माकुमारीज संस्थान कर रहा है वह गौरवपूर्ण है और सरकार के कार्य के लिए मदद है जो ऐसे निःशुल्क सेवाएं प्रदान कर समाज को बेहतर बनाने का कार्य कर रहा है।

उन्नत किसान एवं कृषि साइंटिस्ट भालचंद्र ठाकुर ने किसानों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि किसानी करना हमारी शान है और वैज्ञानिक प्रमाणों पर खेती करना एक उत्तम प्रयोगशाला है जो हम स्वयं ही करके स्वयं उसको अपने और अपने समाज के लिए उपयोग कर सकते उसका लाभ ले सकते हैं और शाश्वत योगिक खेती पद्धति द्वारा जो उगाए जाने वाला अनाज है उसकी गुणवत्ता कई गुना बढ़ जाती है, क्योंकि फसलों पर शुद्ध श्रेष्ठ संकल्पों के वाइब्रेशन का प्रयोग कर उसे सशक्त बनाया जाता है ताकि पुनः सात्विक अन्न द्वारा मन का परिवर्तन हो और हमारा देश सुख-शांति संपन्न बन सही रूप में पूरे जगत के लिए रोल मॉडल बने यही अमृत महोत्सव की विशेष देन होगी। सेवाकेंद्र संचालिका बीके प्रेमलता ने अभियान का उद्देश और प्रस्ताविक में कहा कि किसानो के लगत मूल्य को कम करना, भूमि की उर्वरकता बढ़ाना, विष मुक्त अन्न का निर्माण करना, किसानों में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना आदि विषय लेकर ये अभियान निकाला गया। जिसमे सभी तरह के लोगो ने बहुत बहुत सहयोग दिया उसके लिए धन्यवाद् किया।

अभियान प्रमुख बीके शीला ने सेवाओ की रिपोर्ट सुनाई जिसमे 170 गावों के लगभग हजारों लोगों ने इसका लाभ लिया। जिसका लाभ हजारों लोगों ने लिया। समापन कार्यक्रम में सभी अभियान यात्रिओ को मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। जिसमें बीके प्रेमलता, बीके शीला, बीके चन्द्रकला, बीके रेखा, बीके वसंता भाई ठाकरे, बीके जोगेंद्र भाई वाघमारे, बीके रणवीर सम्मानित हुए। पूर्व विधायक देवराव जी रडके, जिला परिषद् सदस्य सौ. शालिनी देशमुख, सरपंच आनंदरावजी लेंडे, माजी उपसभापति विमल साबले, श्रीराम भाई ठाकुर व अन्य मौजूद रहे।

आध्यात्मिकता को जीवन में लाना ही सच्ची समाजसेवा है

शिव आमंत्रण, दिल्ली। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के समाज सेवा प्रभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में मानवता के संरक्षक समाजसेवियों का सम्मान तोताराम बाजार त्रिनगर न्यू दिल्ली ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में कार्यक्रम रखा गया। समाज में मानव मूल्यों के उत्थान के लिए वैल्यू गेम प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। माउंट आबू से पधारे हुए बीके कीर्ति (समाज सेवा प्रभाग) ने वैल्यू गेम्स के बारे में बताया कि किस प्रकार से कम समय में स्वयं को गुणवान बनाएं इसके लिए परमात्मा से शक्ति लेकर अपने को बुराइयों से मुक्त कर श्रेष्ठ समाज की स्थापना में हम सभी सहयोगी बन सकते हैं तो आओ मिलकर समाज के सहयोगी बने। त्रीनगर सेवा केंद्र प्रभारी सुनीता ने बताया सच्ची समाज सेवा अर्थात सब के प्रति शुभ भावना और शुभकामना हमारे हृदय में रहे और जो भी अवसर सेवा का हमें मिले निःस्वार्थ भाव से करें। सदा खुश रहें दूसरों को खुशी बांटते रहें। समाज सेवा के साथ-साथ आध्यात्मिक सेवा को भी साथ लेकर चलें। बीके मोनिका ने संस्था का परिचय दिया। बीके मीनाक्षी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अनुभव करवाया। बीके मोना ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी समाजसेवियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। संजय शर्मा (बीजेपी लीडर) ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज आश्रम में आने से हमें शांति और प्रेम का अनुभव होता है ऐसे कार्यक्रम समय प्रति समय होते रहना चाहिए जिससे समाज को एक नई दिशा मिल सके। हमें भी ब्रह्माकुमारीज के साथ मिलकर समाज के सहयोगी बनना चाहिए। सभी ने दीप प्रज्वलन कर एवं दीप से दीप जलाकर सामाजिक सद्भावना का संदेश दिया। कार्यक्रम में निम्न अतिथि गण उपस्थित रहे। श्रीमती कविता सिंगल कांग्रेस पार्टी सचिव दिल्ली श्रीमती मंजू शर्मा निगम पार्षद त्रिनगर प्रमोद गुप्ता महामंत्री जिला कांग्रेस आदर्श नगर श्री पवन मेरा ब्लॉक अध्यक्ष त्रीनगर कांग्रेस दिल्ली व अन्य मौजूद रहे।

कई अधिकारियों को मिला ईश्वरीय संदेश

लोधी रोड/दिल्ली। डीडीए, डीजीसीए, एएआई, मौसम विभाग सहित कई अधिकारियों को कैमिस्ट्री ऑफ रिलेशन विषयक संगोष्ठी कराने के पश्चात ईश्वरीय संदेश दिया गया। जहां बीके पीयूष, बीके गिरिजा एवं अन्य प्रतिभागी मौजूद रहे।

किसान सशक्तिकरण कार्यक्रम कर लोगों को दिया ईश्वरीय संदेश

शिव आमंत्रण, कटनी उप्र। आजादी के अमृत महोत्सव एवं किसान सशक्तिकरण अभियान के तहत कटनी सिविल लाइन के सेवाकेंद्र झिंझरी से निकाली गई पेड़ बचाओ रैली जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में महिला थाना प्रभारी श्री मति मंजू शर्मा, यातायात थाना प्रभारी श्री विनोद शुक्ला, अधिवक्ता अध्यक्ष श्री अमित शुक्ला एवं अन्य भाई बहन ने भाग लिया।

बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, बीना/ मप्र। बीना में आयोजित श्रीराम कथा के दौरान ब्रह्माकुमारीज की ओर से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी जानकी दीदी ने बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री महाराज का सम्मान किया। इस दौरान उन्होंने महाराज जी को ब्रह्माकुमारीज की सेवाओं से अवगत कराते हुए माउंट आबू पधारने का निमंत्रण भी दिया। साथ ही परमपिता परमात्मा के दिव्य गुणों का स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए राजयोग मेडिटेशन पर चर्चा की। इस मौके पर शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेन्द्र, बीके रिया बहन, गीतिका बहन, खुरई से शिव कुमार भाई, जितेंद्र भाई, गुलाब भाई भी मौजूद रहे।

बच्चों को संस्कार सिखाएं...

जीवन में मार्क्स से जरूरी है संस्कारों पर अडिग रहना

अपनी चैकिंग करें- घर में कैसा धन आ रहा है

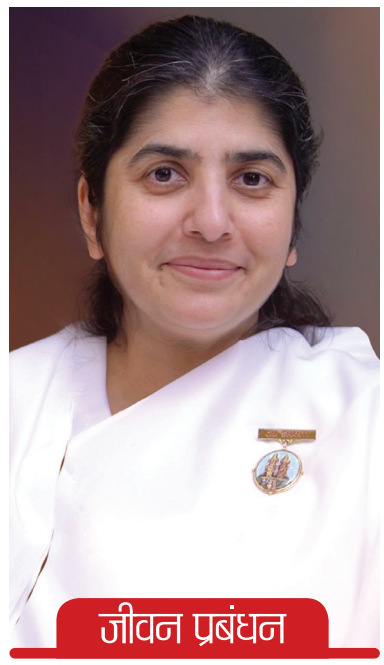

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। जब हम बेटी को कहते हैं तुम एक लड़की हो या अपने बेटे से कहते हैं तुम एक लड़का हो तो समाज में लड़की कैसी होनी चाहिए, लड़का कैसा होना चाहिए उसके लिए कुछ धारणाएं बनाई हैं। तो वो बच्चा उस स्थिति के अनुसार अपने को तैयार करता है। ये सब मर्यादाएं हम सीख लेते हैं, लेकिन हमें साथ-साथ उनको पहले ये याद दिलाना होगा कि तुम एक शक्तिशाली, निडर, निर्भय, पवित्र हो। सम्मान और प्यार तुम्हारा स्वधर्म है। चाहे वो लड़का हो या लड़की हो, जब दोनों सीख लेंगे तो उनका एक-दूसरे के प्रति नजरिया सम्मान का होगा। जैसे-जैसे हमारे बच्चे बड़े हो रहे हैं, हम उनको पढ़ाई का महत्व सिखाते हैं, उन्हें आगे जाकर क्या बनना है, वो सिखाते हैं, लेकिन साथ-साथ हम उन्हें ये भी याद दिलाते हैं कि उनकी खुशी उनके मार्क्स पर आधारित नहीं है। उनको उनका सत्य हर पल याद रहना चाहिए कि उनके मन की स्थिति उनके मार्क्स पर डिपेंड नहीं है। उनके दोस्तों के व्यवहार पर आधारित नहीं है। दोस्तों का एप्रीअल मिले कि वो सही है। उसके लिए उन्हें ऐसा कुछ करने की जरूरत नहीं है, जो आत्मा के धर्म से सही नहीं है। चाहे उनके जीवन में कोई भी परिस्थिति आ गई, क्योंकि उन्होंने पूरा जीवन उस सत्य को पकड़कर बड़े हुए हैं।

संस्कार और कर्म ही हमारी पूंजी...

सबसे महत्वपूर्ण हम उनको हमेशा ये याद दिलाएं कि उनके संस्कार और कर्म उनकी पूंजी हैं। वहीं उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि वो जीवन में जो करे बहुत आगे बढ़े, बहुत आगे जाएं, बहुत कुछ पाएं लेकिन अपने संस्कार और कर्म को सबसे ज्यादा महत्व दें। चाहे कुछ भी हो जाए वो अपने संस्कार और मर्यादाओं को उस पर कभी समझौता न करें। जैसे छोटी सी बात होती है न कई बार बच्चा सिर्फ पास होने के लिए या ज्यादा नंबर लाने के लिए कभी-कभी थोड़ी सी चीटिंग कर लेता है, तो उसने संस्कार को महत्व नहीं दिया, नंबर को महत्व दिया। जब संस्कार को पकड़कर चलें तो आपके मार्क्स तो वैसे ही बहुत अच्छे आ जाएं, लेकिन संस्कार और कर्म ये जीवन की सबसे बड़ी पूंजी हैं। ये उनको पता होना चाहिए। मार्क्स, व्यवसाय, पैसा ये सेकंडरी है। तो लाइफ की प्रयोरिटी बहुत क्लीयर होनी चाहिए। आत्मा के संस्कार और कर्म दिखते नहीं हैं, ये फर्स्ट है और सबसे ज्यादा इम्पोर्टेंट है। ये बच्चे को छोटी उम्र से अगर सिखाया जाए तो वह जीवन भर कभी भूलेंगे नहीं।

धन के साथ आते हैं वाइब्रेशन...

धन भी जो हमारे घर आ रहा है, वो एक वाइब्रेशन के साथ आ रहा है। पैसा सिर्फ करेंसी नहीं है। पैसा वाइब्रेशन और एनर्जी हैं जो हमारे घर में आता है। तो धन कमाने के तरीके पर भी अटेंशन.. बहुत-बहुत-बहुत अटेंशन कि वो एकदम क्लीन हो। हम कहते हैं वाइट मनी। वाइट मनी मतलब जिसकी एनर्जी भी वाइट हो। जब हम कहते हैं गलत तरह से कमाया हुआ धन, लेकिन गलत तरह से कमाया धन का आज डेफिनेशन भी तो चेंज होते जा रहा है। बहुत सारी चीजें जो गलत तरह से कमाई जा रही हैं तो ऐसे धन की डेफिनेशन भी खुद ही क्रिएट करनी होगी। नॉर्मल जो चल रहा है उसकी डेफिनेशन से अपनी डेफिनेशन नहीं क्रिएट करना। क्योंकि कलयुग में नॉर्मल की डेफिनेशन ही बहुत डिफरेंट हो गई। बहुत चीजें आज जो अनएथिकल हैं, जो औरों को दुखः देती हैं, जो एक सूक्ष्म रूप से शोषण है। एक सूक्ष्म रूप से चीटिंग है। बहुत सारी ऐसी चीजों को आज नार्मल का लेबल लग चुका है। जब उन पर नॉर्मल का लेबल लग जाता है, बहुत लोग उसको करना शुरू कर देते हैं। जब बहुत लोग उसे करते हैं तो वह गलत तरह से धन कमा रहे होते हैं। यह हर एक को पर्सनल चेक करना होगा। क्या मेरा धन हाई एनर्जी के साथ घर पर आ रहा है। हम छोटे-छोटे तरीकों से धन बचाने की कोशिश करते हैं, लेकिन वो छोटे-छोटे तरीकों में अगर किसी का मन परेशान हुआ, किसी को डिस्टर्ब कर के बचाया गया है, ऐसा धन घर में कभी खुशी नहीं ला सकता है।

परमात्मा से कनेक्शन जोड़ेंगे तो अपने आप मिलेंगी शक्तियां...

सूर्य से हम यहां बैठकर कमरे में लाइट नहीं मांग सकते हैं। अगर हम यहां हाथ जोड़े और कहें सूर्य देवता लाइट दे दो तो लाइट आएगी अंदर, नहीं। हमें खिड़की दरवाजा खोलना पड़े, लाइट तो है ही। लाइट है हमने खिड़की बंद की। खिड़की खोल दी लाइट अंदर आ जाएगी। परमात्मा ज्ञान का सागर सर्वशक्तिमान कॉन्सटेंट है। उसको बोलना नहीं है दे दो वो कांस्टेंट है। हमें अपनी स्थिति को वैसा बनाना है जिससे हमारा कनेक्शन उससे जुड़ेगा और डेटा अपने आप डाउनलोड हो जाएगा। यदि हमने उससे अपना कनेक्शन नहीं जोड़ा और जीवन भर कहते रहें कि शक्ति दे दो। जैसे फोन को चार्ज करना है तो कनेक्शन जोड़ना है।

भारत आज भी आध्यात्म को नहीं भूला है: डॉ. तोगड़िया

शिव आमंत्रण, जबलपुर। सारा संसार भौतिकवाद में फंसा है, पर भारत अब भी संसार के सार यानी आध्यात्म को नहीं भूला है। वस्तुतः भारत की पहचान ही आध्यात्मिक शक्ति है। यही शक्ति भारत के विश्व गुरू बनने का आधार होगी। ये बात अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया ने कही। वे ब्रह्माकुमारी संस्थान के स्थानीय मुख्य केंद्र शिव स्मृति भवन, भंवरताल में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर बोल रहे थे। 'स्वर्णिम भारत का आधार-आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय के तहत डॉ. तोगड़िया ने समूचे ब्रम्हांड में एनर्जी का परम श्रोत परमात्मा को बताया। अन्न से मनुष्य में एनर्जी आती है, तो अन्न में वनस्पति से। वनस्पति सूर्य से एनर्जी लेती है, तो सूर्य सहित सारे नक्षत्र परम पिता परमात्मा से। उस एक ईश्वर से जुड़कर ही हम आत्मिक तौर पर शक्तिशाली हो सकते हैं। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भावना ने भी संबोधित किया।

अपने आंतरिक नेत्र को आध्यात्मिक शक्ति से दिव्य बनाना है: बीके वसुधा

शिव आमंत्रण, झोझूकलां/हरियाणा- आंखें शरीर का महत्वपूर्ण व सूक्ष्म अंग है इसकी देखभाल अति आवश्यक है। इसके साथ-साथ अपने आंतरिक नेत्र को आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर जांच कर व्यर्थ और नेगेटिव को मिटा स्वयं के साथ समाज को दिव्य बनाना है। यह उद्गार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की झोझूकलां शाखा के तत्वावधान में पवन धीर आंखों का अस्पताल भिवानी के सहयोग से झोझूकलां में आयोजित निःशुल्क नेत्र जांच शिविर के उद्घाटन के अवसर पर क्षेत्रीय प्रभारी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी वसुधा ने व्यक्त किए। शिविर में 75 लोगों की आंखों की जांच कर निःशुल्क दवा प्रदान की गई। इस अवसर पर डॉक्टर अक्षय व डॉक्टर अनीता ने लोगों की आंखों की जांच कर उनकी देखभाल करने के उपाय बताए।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

युवा देश के कर्णधार होते हैं, ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर आज लाखों युवाओं का जीवन बदल गया है, ऐसे परिवर्तनकारी युवाओं की अनुभव गाथा...

परमात्मा का मार्ग हमने सही और सटीक चुना

शिव आमंत्रण । मेरे परिवार के सभी लोग ब्रह्माकुमारीज़ के इस ज्ञान मार्ग से जुड़े हैं, इसलिए मैं भी बचपन से ही आ गई, लेकिन एक चीज तो यह सत्य है कि परमात्मा का मार्गदर्शन मनुष्य के जीवन के लिए सबसे उपयुक्त और बेहतरीन है। यदि आप सच्चे दिल से उसे सब बात बताओ तो वह सबकुछ सुनता है। रिस्पांस करता है। जब मनुष्य को सही गाइडेंस की जरूरत होती है तो बहुत ही सुन्दर तरीके से उसे रास्ता बताता है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिए भी यह जीवन बहुत ही उपयोगी है। इस जीवन को अपनाने से एकाग्रता की शक्ति में काफी बढ़ोतरी हो जाती है। हमारे मन में किसी भी प्रकार का अवगुण न आ जाए तो उसके लिए राजयोग ध्यान वाली लाइफ सबसे अच्छी है।

- सुरुचि झा, छात्रा, खगाड़िया, बिहार

परमात्म मुरली पढ़कर व्यर्थमुक्त बना

शिव आमंत्रण। मैं पिछले ढाई साल से परमात्म मुरली रोज पढ़-सुन रहा हूं। इससे जीवन व्यर्थमुक्त हो चुका है। पहले हमेशा व्यर्थ की बातों में ही लगा रहता था। इससे अनावश्यक बुद्धि बिजी के होने कारण मन थक कर तनावग्रस्त हो जाता था। फिर कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। एक दिन मेडिटेशन सीखने की खोज में मोबाइल पर पूरा दिन लगा रहा, तब मुझे ब्रह्माकुमारीज़ का मेडिटेशन सीखने की जानकारी मिली। उस दिन से मैंने नजदीकी आश्रम खोजकर वहां रोजाना जाना शुरू किया। रोज शिव बाबा की मुरली, ईश्वरीय महावाक्य सुनने लगा। धीरे-धीरे मेरा मन शांत रहने लगा और मन सकारात्मक ऊर्जा से भर गया अब मेरा मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया है। मैं सबसे अनुरोध करता हूं कि आप भी मेडिटेशन सीखकर जीवन सरल बनाएं।

- राजू कुमार, बरौनी, बिहार

जितनी सहन शक्ति होती है उतनी सर्वशक्तिमान की सर्व शक्तियां स्वतः प्राप्त होती है

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मन-बुद्धि सूक्ष्म है लेकिन शक्तियां तो आत्मा की हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड। मन पर कंट्रोलिंग पावर चाहिए, मानो हमको दो मिनट मिलें हों तो हम कंट्रोलिंग पावर से मन को जहां चाहें वहां उसी स्थिति में स्थित कर सकें। यह कंट्रोलिंग पावर बहुत चाहिए और कंट्रोलिंग पावर आएगी तब जब मुझे यह निश्चय हो कि मैं मालिक हूं, आत्मा हूं। उस मालिकपने के नशे से आप स्वयं को कंट्रोल कर सकते हो। कर्मेन्द्रियां हमारे कर्मचारी हैं, मन-बुद्धि सूक्ष्म है लेकिन सूक्ष्म शक्तियां तो आत्मा की हैं ना। आत्मा की यह शक्तियां हमारे कंट्रोल में होनी चाहिए। लेकिन इन पर कंट्रोल उन्हीं का होगा, जिनका बाबा से बहुत-बहुत एकदम दिल का स्नेह हो। एक होता है- बाबा, आप तो हो ही मेरा, बाबा आपके बिना कौन है, हैं ही आप। एक होता है-रूह-रूहान करके मन को उस स्थिति में स्थित करना। दूसरा है जिसमें दिल का प्यार है, उसको फिर वह मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। बस, बाबा कहा और बाबा में समा गए यानी लव में लीन हो गए। आत्मा-परमात्मा में लीन तो नहीं होगी, लेकिन लव में लीन तो होगी। यह लवलीन अवस्था ऐसी है जो दो अलग-अलग होते भी एक हैं। उस समय आपको ऐसा आएगा ही नहीं कि मैं अलग हूं, बाबा अलग है। ऐसे ही लगेगा जैसे दोनों एक-दो में समा गए हैं। तो लव करने वाले नहीं बाबा आप बहुत मीठे हो, बाबा आप बहुत प्यारे हो... यह नहीं लेकिन लवलीन माना लव में एकदम समा जाए और कुछ नजर नहीं आए, उसी अनुभव में खोया हुआ हो। जैसे सागर में खो गए तो वह लवलीन अवस्था जो है वह प्यारी और ऊंची है, लेकिन इसके लिए बाबा ने हमको विदेही, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करने के लिए समय प्रति समय जो इशारा दिया है, वह करना पड़ेगा।

जैसे बाबा ने कहा है कि कर्मातीत बन जाओ, क्योंकि कर्म का बंधन 63 जन्म का रहा हुआ है। वह कर्म का बंधन चाहे पास्ट का, चाहे वर्तमान का खींचे नहीं। वर्तमान का भी तो कर्म का बंधन होता है न। समझो, किसका किस आत्मा से समीप का बहुत संबंध है तो वह भी कर्म का बंधन हो गया न। वह कर्म का बंधन बीच में जरूर विघ्न डालेगा। कर्मातीत का अर्थ ही है कर्म का बंधन नहीं खींचे, कर्म करें लेकिन न्यारे होकर कर्म भी पूरा करें और जिसके साथ कर्म में आते हैं उससे भी प्यारे बनें और बाबा के भी प्यारे बनें। कर्मातीत अवस्था का भी अभ्यास चाहिए। इसी को बाबा ने दूसरे शब्दों में कहा विदेही बन जाओ। देह की आकर्षण न हो। 63 जन्म हम देह की आकर्षण में ही रहे और बॉडी कॉन्सेस नेचुरल हो गया। बॉडी कॉन्सेस तो न चाहते हुए चलते-फिरते भी हो जाते हैं, क्योंकि 63 जन्म का अभ्यास बॉडी कॉन्सेस का है। अभी बाबा कहते हैं बॉडी कॉन्सेस न होके, सोल कॉन्सेस बनो। मैं मालिक हूं, इस बॉडी की कर्मेन्द्रियों को चलाने वाली हैं। पहले तो बॉडी के वश थे, उसी कॉन्सेस में रहते थे, अभी बाबा कहते हैं नहीं, सॉल कॉन्सेस और सुप्रीम सोल कॉन्सेस बनो और जब तक सोल कॉन्सेस नहीं होंगे तो सुप्रीम सोल कॉन्सेस नहीं होंगे। **क्रमशः**

और बाबा ने सभी को भिजवाया ईश्वरीय साहित्य

अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को भेजा पत्र

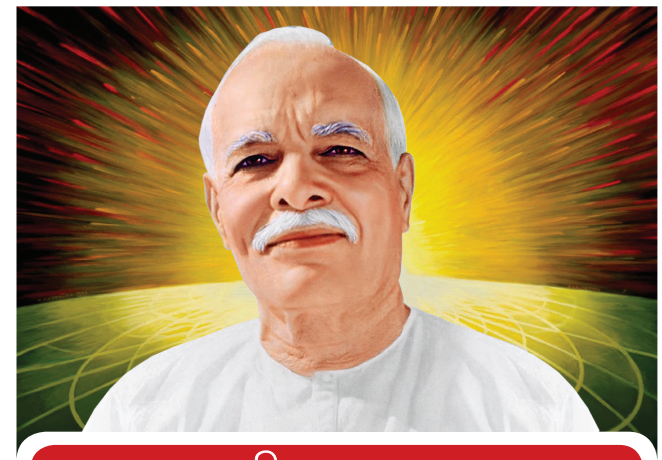

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

पांच हजार वर्ष पहले की तरह अपना पार्ट पुनरावृत्त कर रहे हैं!

शिव आमंत्रण, आबू रोड। वास्तव में इन बमों और मूसलों द्वारा उनका महाविनाश होगा। विश्व का सतयुगी दैवी स्वराज्य तो श्रीकृष्ण ही के हाथ में आएगा। क्या आपको मालूम है कि आपके इलाके में, भारत देश में, प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा सरस्वती द्वारा 5000 वर्ष पहले की तरह सतयुग की पुनः स्थापना का दिव्य कार्य चल रहा है? गुप्त रूप में होने के कारण उन पर प्रान्तीय तथा आपकी विदेशी सरकार द्वारा अत्याचार हुए हैं। आप, जिनके शासन काल में परमपिता परमात्मा का अवतरण हुआ है, उस परमपिता के स्वरूप के बारे में अपरिचित हैं।

आपको मालूम रहे कि परमपिता परमात्मा, प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण तन में अवतरित हो चुके हैं और उन्होंने राजसूय अश्वमेध अविनाशी ज्ञान-यज्ञ की पुनः स्थापना की है, जिसकी दिव्य शक्ति के परिणामस्वरूप विश्व के अनेक धर्मों से होने वाला कलह कुछ ही समय के बाद मिट जाएगा। अंग्रेज सरकार ने कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग को स्वराज्य देने की बात चलाकर फूट के बीज बो दिये हैं और स्वयं एक ओर खड़े होकर उन द्वारा एक-दूसरे को जलाने का तमाशा देखने की चाल चली है। उनका भी दोष नहीं है क्योंकि वे भी 5000 वर्ष पहले की तरह अपना पार्ट पुनरावृत्त कर रहे हैं! भविष्य में जो महाविनाश आएगा उसमें पाश्चात्य राष्ट्रों के साथ यहां भारत में कलह करने वालों का भी विनाश होना अवश्यम्भावी है। उसके बाद पृथ्वी पर सम्पूर्ण पवित्रता, सुख और शान्ति सम्पन्न दैवी स्वराज्य प्रगट होगा। हम आपको कुछ साहित्य भेज रहे है जिसमें स्पष्ट रूप से इन रहस्यों को खोला गया है.....।

देखिए तो किंग जार्ज तथा क्वीन एलिजाबेथ को सुनहरी कागज पर सुनहरी अक्षरों में, चित्रों सहित अलग-अलग भेजा गया यह पत्र कितना स्पष्ट है। परन्तु फिर भी तो राज्य के नशे में चूर उन दोनों ने प्रभु को जानने की चेष्टा नहीं की।

और बाबा ने भिजवाए थे पत्र...

जब भारत का राजनीतिक बंटवारा हुआ तब बाबा ने जगदम्बा सरस्वती जी द्वारा पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल मोहम्मद अली जिन्ना, नेपाल और उदयपुर के महाराजा आदि को पत्र को पत्र भिजवाए। उसमें उन्हें स्पष्ट लिखा गया कि यद्यपि मनुष्य सोचता कुछ है, परन्तु बहुत बार होता उससे भिन्न ही कुछ है। उसका एक मुख्य कारण यह है कि मनुष्य स्वयं को नहीं जानता और इस सृष्टि-चक्र की गति को भी नहीं जानता है। आप समझते थे कि आप पाकिस्तान (पाक-स्थान) की संस्थापना कर रहे हैं। आपको स्वप्न तक में भी शायद यह विचार नहीं आया होगा कि इसकी स्थापना होते ही, शुरू में ही लूट-मार, कत्ल, अग्निकाण्ड होगी। निर्दोष नर-नारियों तथा बच्चों पर अत्याचार होंगे जैसे कि अब हो रहे हैं।

यज्ञ में पधारने का दिया निमंत्रण....

सभी धर्मग्रंथ भी हमारे इस मंतव्य की पुष्टि करेंगे कि जब तक कोई आत्मानुभूति नहीं कर लेता और परमपिता परमात्मा का पूर्णतः पवित्र बच्चा अथवा फरिश्ता नहीं बन जाता, तब तक वह सही मायने में पाकिस्तान (पवित्र देवताओं का देश) स्थापित नहीं कर सकता। अतः आप यह अलौकिक कर्त्तव्य समझते हुए मैं आपको 5000 वर्ष (कल्प) पहले की तरह ईश्वरीय निमंत्रण देती हूं कि आप इस अति पवित्र राजसूर्य अश्वमेध अविनाशी ज्ञान-यज्ञ में पधार कर देखें और जानें कि किस प्रकार हम शक्तियों, जो कि आपकी शुभ-चिंतिका हैं, सारे विश्व में आत्मिक शक्ति द्वारा सही मायनों में पाक स्थान स्थापित कर रही हैं। उस शांत दैवी सृष्टि में मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी कोई पाप नहीं करेंगे। उसमें यथा राजा-रानी तथा प्रजा सभी पवित्र और श्रेष्ठाचारी होंगे। आप इस पवित्र यज्ञ में आएं और इस सृष्टि नाटक और कलियुग के भावी महाविनाश के रहस्य का ज्ञान प्राप्त करें। **क्रमशः...**

बाबा के गले का हार बनना है तो अपनी स्थिति निर्विघ्न बनाओ

अंतिम घड़ी हमारी स्थिति कैसी रहे यह बात न भूलें...

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

शिव आमंत्रण, आबू रोड। हम बच्चों को बाबा ने इतना अच्छा खजाना दे इतना शृंगारा है- दिल कहता है ऐसे शृंगारी हुई मूर्ति सदा हमारी रहे। बाप का साथ हमको साक्षीपन की स्थिति से, न्यारा और प्यारा बनने में मदद करता है। जितना बाबा का साथ है उतना दिखाई पढ़ता है। अनुभव कहता है साक्षी हो करके अपने पार्ट को देख बाप को पहचान, हर आत्मा की अपनी-अपनी विशेषता है, वह भी अच्छी तरह से देख, जान। संगमयुग पर श्रेष्ठ पार्टधारी बनने का भाग्य मिला है। यह अंदर से अपने भाग्य की महिमा करने के बिगर आत्मा रह नहीं सकती।

बाबा कहते सन्तुष्टता सबसे बड़ा श्रेष्ठ गुण है और दिखाई पड़ता है, उसमें सर्वगुण समाए हुए हैं। सहजयोगी, राजयोगी फिर कर्मयोगी निरंतर योगी हो, करके पार्ट बजाना। पार्ट बजाते हुए भी सहजयोगी, राजयोगी हो करके उस पोजीशन में रहना, क्योंकि जिसका जो ऑक्यूपेशन होता है, उसी प्रमाण वह कार्य करता है। हम लोगों का ऑक्यूपेशन कितना बड़ा है- पालना और पढ़ाई, श्रीमत और वरदानों की कमाल है। ब्रह्मा बाबा ने हम सबको ऐसी पालना दी है, उस पालना कि जो शक्ति है, वह अभी तक सकाश का काम कर रही है। बाबा ने यह बीज डाला कि आप मेरी संतान हो तो वह हम लोग भूले ही नहीं हैं। बचपन के दिन बड़े प्यारे, आज दिन तक तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं... बाबा ने यह भी अनुभव कराया है कि सोना है तो कैसे, भोजन खाना है तो कैसे। हम लोगों के पेट में ब्रह्मा भोजन ही गया है। उसकी शक्ति अभी तक काम कर रही है। ज्ञान का जो बीज डाला है उसकी पालना फिर स्वयं बाबा ने ही की है तो पालनहार की कितनी महिमा करें।

बाबा ने लेवता पन के संस्कार को दातापन के संस्कार बना दिए हैं। कोई घड़ी ऐसी नहीं आ सकती जो कहें बाबा मुझे शान्ति दो, शक्ति दो, है ही शान्तिदाता मेरा बाबा। बाबा ने इतनी शान्ति दी है जो दातापन के संस्कार बन गए हैं। इतना सुख दिया है जो सुखदाता-पन के संस्कार बन गए हैं। इतना अन्दर से दुःख का नाम निशान गुम कर दिया है जो जी चाहता है जो भी संबंध-संपर्क में आए उसके भी दुःख का नाम निशान खत्म हो जाए।

सत्यता ऐसी मीठी, प्यारी चीज है, सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। समय पर आपेही ठीक हो जाएगा परन्तु मुझे क्या करने का है? मुझे जैसे बाबा चलाए, जहां बाबा बिठाए वैसा चलना है। बाबा ने अपनी गोद दी है बैठने के लिए। कभी यह ख्याल नहीं आएगा कि मैं बूढ़ी हो गई हूं। अभी मुझे कौन संभालेगा। हमको अच्छा ही नहीं लगता है। हमको कोई उस दृष्टि से भी देखे। जिसने जन्म दिया है, उसने पालना दी है, वही साथ ले जाने के लिए सदा साथ निभाया है और हम भी निभाने वाले हैं। अपनी दिल दिया मेरे दिल में समा जाओ, गोद दिया, सिर माथे पर बिठाया, ज्ञान गंगा बन जाओ, भागीरथ इसीलिए मिला है। हमको पदमापदम भाग्यशाली बनाने के लिए ही तो बाबा मिला है। ऐसी बातें हमारी बुद्धि में न सिर्फ रमण करने के लिए हैं लेकिन यह हमारी नेचुरल लाइफ है जो और देख करके वह भी अपनी ऐसी लाइफ बनाने के लिए उमंग-उत्साह में आ करके जल्दी बन जाए। उनको यह क्वेश्चन न उठे इनको आगे इतनी परीक्षाएं हैं, इनके आगे यह है, हमारे आगे क्या होगा। यह क्वेश्चन किसको पैदा करना, यह भी हमारी कमजोरी है। सबको यही उमंग-उत्साह अपने आप पैदा हो जाए, जैसे इन्होंने बाबा से जीवन बनाई वैसे हम भी बनाकर दिखाएंगे। ऐसी हमारी लाइफ बने, जिससे औरों का भी कल्याण होगा।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

पुरुषार्थ करने वाले खुद निकाल लेते हैं अपना मार्ग

भगवान भाग्य बांट रहा है, ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता है

कभी-कभी ऐसा भी होता है बड़े हैं योग करने नहीं देते, क्योंकि खुद भी नहीं करते लेकिन अपना रास्ता खुद निकाल लेना है। थोड़ी-थोड़ी देर में बाबा के कमरे में बैठकर योग करना है। चार्ट बढ़ाते चलें क्योंकि पुरुषार्थ करने वालों को संसार में कोई रोक नहीं सकता। वो अपना मार्ग खुद निकाल लेते हैं। जब आजकल के लड़के-लड़कियां विकारों के दलदल में फंसने के लिए किसी की परवाह नहीं करते, मां-बाप को भी रोता छोड़ कर चले जाते हैं, हम तो भगवान के बच्चे जो श्रेष्ठ पद के अनुगामी हैं, जिन पर भगवान की नजर है, जिनको वह स्वयं बहुत मदद कर रहा है, क्या उनको छोटी मोटी बातों से रुक जाना चाहिए? अपने को मजबूत बनाना है। मां-बाप कितने कष्ट उठा रहे हैं अपने बच्चों को देखकर कि उनके बच्चे राह भटक गए हैं। कर्म का सिद्धांत यही है एक तो ये नहीं करना है, दूसरा अपने बड़ों को सम्मान देना, कार्यों में सबका सहयोग करना, झुककर चलना, प्यार बांटना, ईगो में न रहना, घर में खुशी का माहौल बनाकर रखना, जो नारी ये सीख लेती है वो परिवार को बांधकर रखती है। टूटे हुए परिवारों को जोड़ देती हैं। ऐसा मौका दोबारा नहीं आएगा कि भगवान हमारे सम्मुख हो, भाग्य बांट रहा हो, सत्य ज्ञान दे रहे हों, कह रहा हो मेरे से जो चाहो ले लो। एक ही बार ये मौका मिलता है, जब हम भगवान के अति समीप आते हैं। चिंतन करो ये जीवन अच्छा या वह जीवन अच्छा। यह जो मन में दुविधा रहती है ना युवा काल में इधर जाएं या इधर जाएं।

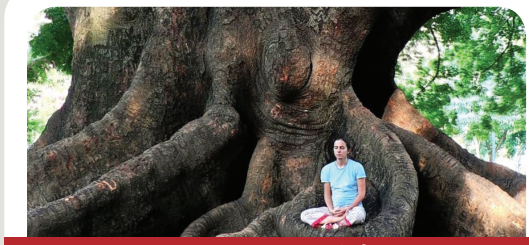

त्याग-तपस्या का मार्ग है आध्यात्म

आध्यात्म का मार्ग त्याग और तपस्या का हैं। चल पाएंगे या नहीं चल पाएंगे या गृहस्थ में चले जाएं झंझटों से मुक्त हो जाएं। परिवार बसाएं क्या चाहती हैं कन्याएं सोच लें। दुविधा नहीं, डिसीजन कर लेना चाहिए। भगवान के मार्ग पर चलना हैं तो बहुत शहनशील बनकर चलना होगा। नम्रचित्त बनकर चलना होगा, क्रोध और अहंकार को विदाई देनी होगी। दुनियावी मार्ग पर चलना है तो दूसरों की अधीनता को अपनाना होगा। दूसरों की बातों को सुनने की आदत डालनी होगी। आप जहां भी जाएं, शांति हो जाए, जहां भी आप जाएं समस्याएं उस मैदान को छोड़कर भाग जाएं। ऐसा आपको अपना जीवन बनाना है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं संसार में जहां भी जाएंगे समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। लोग सोचेंगे इसे जल्द ही छुटकारा मिले, कहां से आ गई।

जीवन को सुंदर बनाना है

हमें अपने जीवन को बहुत सुंदर बनाना हैं, तो भय भी निकाल दें, निर्णय जल्दी करें। कई कन्याएं निर्णय करने में बहुत देर कर देती हैं। बाबा का जीवन भी अच्छा लगता है तो गृहस्थ में जाने की भी इच्छा होती है, तो मन में हलचल रहता है, इधर जाएं या इधर जाएं। मेरा यही कहना है कि भगवान का बनकर चलना, ये जीवन भगवान के काम आ जाए, ये जीवन संसार के कल्याण के काम आ जाए बड़ा श्रेष्ठ भाग्य है। क्योंकि जैसा अब हम देख रहे हैं युग बदल रहा है।

आध्यात्मिक शक्तियां देती हैं सदाकाल का सुख

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

- शिव शक्तियों की भुजाएं दिव्य अलंकारों की प्रतीक

मेरे स्वरुप में सतोप्रधानता का निखार आता जा रहा है... मुझमें तेज, ओज दिव्यता का समावेश हो रहा है... मैं पवित्र आत्मा बनती जा रही हूं... कितना सुन्दर अनुभव है यह...मुझे जागृति आ गई है कि अब मुझे हर कर्म परमात्मा की श्रीमत पर ही करना है...और यथार्थ समझ से बड़ी सावधानी से करना है। अब धीरे-धीरे मैं शुद्ध आत्मा संसार में अवतरित हो रही हूं... और शरीर में भृकुटी के मध्य में विराजमान होती हूं...अपने पवित्रता के प्रकम्पनों को मैं शरीर की सर्व कर्मेन्द्रियों में प्रवाहित करती हूं... मेरे अंग-अंग शीतल होते जा रहे हैं और अब इन प्रकम्पन्नों को मुझे अपने हर कर्म में संबंधों में प्रवाहित करना है... ओम् शांति... शांति... शांति।

राजयोग द्वारा अष्ट शक्तियों की प्राप्तियां...

भारत आध्यात्म प्रधान देश है। यहां लोगों के मन में किसी न किसी रूप में ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा है। प्रतिदिन लोग अपने-अपने धर्मस्थल पर अपनी भावना अर्पित करने जाते हैं। अपने मन को ईश्वर से जोड़ने के लिए विभिन्न विधियों का आधार लिया जाता है। भगवान को कभी देवताओं के रूप में और कभी देवी या शिव शक्तियों के रूप में याद किया जाता है। इन सब विधि-विधानों के द्वारा मानव अपने जीवन में शक्ति को प्राप्त करना चाहता हैं, परन्तु कौन सी शक्ति? यह प्रश्न विचारणीय है। दुनिया में किसी के पास धन की शक्ति है जिससे वह सुख-सुविधाओं के सारे साधन प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु परिवार में अपने किसी प्रिय व्यक्ति को जब कोई असाध्य बीमारी आ जाती है तो वह महसूस करता है कि यह धन की शक्ति उसके किसी काम की नहीं है। किसी के पास शारीरिक शक्ति होती है लेकिन जब उसका कोई अति प्रिय जीवन की अंतिम सांसें ले रहा होता है तो वह टूटकर बिखर जाता है। इसी प्रकार किसी के पास वाक् शक्ति है और किसी के पास लिखने की शक्ति है लेकिन कई बार वही शक्ति उसके दुःख का कारण बन जाती है। यह भौतिक शक्तियां व्यक्ति को अल्पकाल का सुख या फायदा तो पहुंचा सकती हैं लेकिन सदाकाल की नहीं। वह हमेशा यही महसूस करता रहता है कि उसमें शक्ति कम है। वह कदम-कदम पर जीवन में संघर्ष करते-करते स्वयं को शक्तिहीन महसूस कर रहा है। वास्तव में वह जिस शक्ति के अभाव से दिलशिकस्त हो जाता है, वह आध्यात्मिक शक्ति है। आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने का एक ही स्त्रोत है वह है राजयोग का अभ्यास। राजयोग द्वारा हम ऐसी शक्तियां प्राप्त करते हैं जिनसे इस भौतिक जगत में रहते हुए विभिन्न परिस्थितियों के बीच जीवन को संतुलित रख सकते हैं।

शिव शक्तियों को दिखाते हैं अष्ट भुजाधारी...

इन शक्तियों को प्राप्त करने के यादगार रूप में भारत में शिव शक्तियों को अष्ट भुजाधारी दिखाते हैं। इन भुजाओं में शस्त्र रूपी दिव्य अलंकार दिखाए हैं। इन शस्त्र रूपी शक्तियों से दिव्य अलंकार दिखाए हैं। इन शास्त्रों से उन्होंने किसी असुर का वध नहीं किया, परन्तु व्यक्ति के अन्दर की आसुरी मनोवृत्तियों को या उसकी कमजोरियों को खत्म किया। यही कमजोरियां व्यक्ति को भीतर से शक्तिहीन और खोखला कर देती हैं। इन्हीं कमजोरियों के कारण वह कई बुराइयों के वश हो जाता है। इसके परिणाम स्वरूप वह जीवन में स्वयं प्रति और अपने संबंधों में अनेक समस्याओं और परिस्थितियों का निर्माण कर लेता है। इसलिए भक्ति में शिव शक्तियों को अष्ट भुजाधारी और रावण को दस सिरों वाला दिखाया है। भुजा मददगार का प्रतीक है। **क्रमशः...**

एक सेकंड में माइंड को जहां लगाना चाहो वहां लगाओ

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

- जीवन हो लगाव मुक्त, सुख-दुख में समभाव रहे

वैराग्य

कितना जल्दी हम अपने मन को डिटैच कर सकते हैं। प्योरिटी अर्थात् कहीं आंख न डूबे। यहां गए ये बहुत अच्छी चीज है वो बहुत अच्छी चीज है, ये कपड़ा बहुत अच्छा है ये मोबाइल बहुत अच्छा है। चीजों में आंख बहुत जल्दी डूब जाती है, ये पर्स कहां से ली? एक्स्ट्रा है क्या? एक ही चीज मन को बताते रहना है जो कुछ दिख रहा है अनित्य है। कोई स्तुति कर रहा है बहुत स्तुति, कोई निंदा कर रहा है ये भी अनित्य है। सुख के प्रति हमारा लगाव है दुःख के प्रति हमारा द्वेष है।

वास्तव में देखा जाए तो दो ही विकार हैं राग और द्वेष। जहां सुख है उसके प्रति राग है जहां दुःख है उसके प्रति द्वेष। दर्द हुआ तो हम तुरंत दर्द की दवाई लेते हैं क्योंकि हमको दर्द नहीं चाहिए। वो अभ्यास ही नहीं किया है कि उस दर्द को साक्षी होकर देखूं। जो कुछ संसार में हो रहा है वह सब अनित्य है। ये स्मृति-विस्मृति का खेल है। जीवन के जो अच्छे अनुभव है वो भी एक लगाव है और रहने चाहिए ठीक है परन्तु इतना लगाव न हो जाए कि वर्तमान ही हाथ से चला जाए। किसी के प्रति लगाव भी नहीं किसी के प्रति द्वेष भी नहीं। प्योरिटी अर्थात् वैराग्य। बाबा कहते हैं एक सेकंड में माइंड को जहां लगाना चाहो वहां लगाओ। जीवन में बहुत अच्छा-अच्छा अनुभव है हम उनकी याद में अगर चले गए तो वर्तमान चला जाएगा। ठीक है बहुत अच्छा है लेकिन उससे बल लो और आगे बढ़ो। उसको पकड़ के नहीं रखो। बहुत दुःख अनुभव है, बहुत आत्माओं का बचपन बहुत दुखद रहा हैं, उनके दोस्तों ने, रिलेटिव ने ऐसी-ऐसी चीजें उनके साथ की हैं कि उनको वो याद आती रहती हैं। खुश होते हैं फिर दुखी होते हैं, वो भी नहीं ये भी नहीं। वर्तमान बस इस समय की सच्चाई ये है जो हो गया उसे हटाओ, जो होने वाला है वह कल्पना है, जो हो गया वह केवल स्मृति है।

निंदा-स्तुति और लाभ-हानि में रहें स्थिर...

समता- समता अर्थात स्थिर। ना इधर, न उधर। बहुत निंदा, बहुत स्तुति दोनों में स्थिर, हार-जीत, हानि-लाभ दोनों में स्थिर। ये हैं तो भी ठीक, वो है तो भी ठीक। प्योरिटी की सबसे बड़ी परिभाषा है जो स्थित रह पाता है वहीं प्योर है। सब

स्थितियों में समान। हमारी खुशी बहुत सूक्ष्म है और आंतरिक है। दर्द हो रहा है आंखें बंद करके देखो, उस दर्द को की ये जो दर्द है थोड़ी देर में चला जाएगा। जो कुछ दिखाई दे रहा है सब थोड़ी देर के लिए है। मन में जो विचार भी आ रहे हैं, विकारी विचार का आक्रमण थोड़ी देर रहेगा चला जाएगा। मुझे उसको क्रिया में नहीं लाना है।

सिम्पलीसिटी...

हमारे कपड़े हमारा, रहन-सहन सब कुछ सिंपल। इसे और सिम्पलीफाई करते जाना हैं, लाइफस्टाइल सिंपल।

प्रभु प्रेम...

परमात्म प्रेम के आगे संसार के सारे प्यारे तुच्छ हैं, स्वार्थी हैं इस प्यार के आगे। इसका अनुभव हर एक ने किया होगा, इसको इमर्ज करते रहना।

पारदर्शी...

खुली किताब हो जीवन। सोच कुछ रहे हैं, बोल कुछ रहे हैं, कर कुछ रहे हैं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् तीनों एक हो जाए। ब्राह्मण जीवन अर्थात् डिटेक्ट कर सकें ये मनमत, ये श्रीमत, ये परमत।

जितेंद्रीय...

जिसने अपने सारी इन्द्रियों को जीत लिया है। सबसे ज्यादा उपद्रव मचाने वाली इन्द्रिय है रस। जिसने रस इन्द्रियों को जीत लिया, वह सभी इंद्रियों को भी जीत लेते हैं। जिसने अपने टेस्ट को जीत लिया, उसके सारे विकार अपने आप कम हो जाते हैं। क्योंकि हम और शरीर के बीच भोजन है। इससे सबसे ज्यादा आसक्ति है हमारी।

मन्सा द्वारा शक्तियों का दान, वाचा द्वारा ज्ञान दान और कर्म द्वारा गुणों का दान करो

ब्रह्माकुमारीज़ सारे विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विकसित कर रही है: ओम बिरला

शिव आमंत्रण, दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने राजयोग के माध्यम से देश-दुनिया के करोड़ों लोगों के जीवन को परिवर्तित किया है और आध्यात्मिकता से आत्म विकास की सीख दी है। यह बात लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कही। मौका था तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित दया और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण थीम पर आयोजित मेगा सम्मेलन का। इस दौरान पांच हजार से अधिक लोग मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जिसकी संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से चल रही है और ब्रह्माकुमारी संस्था सारे विश्व यही भावना विकसित कर रही है और राजयोग के माध्यम से आंतरिक उर्जा को सं य कर रही है। स्कूल, कॉलेजों में आध्यात्मिक ज्ञान व योग शामिल करना आवश्यक है। उन्होंने ब्रह्माकुमारियों की कल्प-तरुह वृक्षारोपण परियोजना एवं इसके मोबाईल ऐप का शुभारम्भ करते हुए संस्था द्वारा मानवता के लिए चलाये जा रहे आध्यात्मिक जागृति, प्रकृति, पर्यावरण आदि सम्बंधित अभियानों की सराहना करते हुए जन जन को इससे जुड़ने का आह्वान किया। देश की आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में, ब्रह्माकुमारीज़ संगठन ने वर्ष के लिए इस उपयुक्त थीम को चुना है जो न केवल पूरे भारत को बल्कि संपूर्ण मानव जाति को सार्वभौमिक भाईचारे और 'एक विश्व' के आध्यात्मिक सूत्र के माध्यम से एकजुट करने में सक्षम है।

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्रह्माकुमार बृजमोहन ने कहा कि परमात्मा ही दया और करुणा के सागर है वो एक ही बार आकर सारी सृष्टि पर ही दया और करुणा करते है, मन की शुद्धि और आत्मा की शुद्धि करते है क्योंकि मूल स्त्रोत को सुधारने से ही स्थाई और सम्पूर्ण सुधार होता है। कल्पतरु वृक्षारोपण राष्ट्रीय परियोजना की भारत संयोजिका राजयोगिनी बीके आशा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संगठन भारत में अपने हजारों राजयोग केंद्रों के माध्यम से 40 लाख से अधिक पेड़, 1 व्यक्ति 1 पौधा के आदर्श वाक्य के साथ लगाएगा जो लोगों को प्रकृति और पर्यावरण के अनुकूल बनने और जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने में मदद करेगा। इस दौरान गिव मी ट्रीज ट्रस्ट के संस्थापक स्वामी प्रेम परिवर्तन (पीपल बाबा); क्लीन द माइंड, ग्रीन द अर्थ के संस्थापक श्री वी श्रीनिवास राजू; भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त एचई एसबी हनुमानजी, भारत में मंगोलिया दूतावास के राजदूत एच. ई. गेनबोल्ट आदि शामिल रहे। प्रसिद्ध गायक हरीश मोयल ने अपने प्रोजेक्ट-थीम आधारित गीतों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

स्कूली बच्चों को किया मोटिवेट

शिव आमंत्रण, फरीदाबाद/हरियाणा। स्कूल के बच्चों को मोटिवेट करते हुए बीके प्रीति एवं बीके ज्योति ने बताया कि हमें एक दूसरे की हेल्प कर उनका सहारा बनना चाहिए और माता-पिता की आज्ञा का पालन करना ही हमारे जीवन का परम कर्तव्य है और बीके ज्योति ने बच्चों को कुछ एक्टिविटीज कराएं।

राजयोग मेडिटेशन का बताया महत्व

शिव आमंत्रण, उकलाना मंडी/हरियाणा- भाजपा प्रदेश महामंत्री मोर्चा डॉक्टर आशा खेदड़ को ज्ञान चर्चा के पश्चात ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके दीपक तथा साथ में बीके किरण एवं बीके मूर्ति।

कर्मों में परिवर्तन से बनेगा अपराध मुक्त जीवन: बीके सीता

शिव आमंत्रण, पन्ना/ मप्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पन्ना द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के स्वर्णिम भारत की ओर वार्षिक अभियान के अंतर्गत जिला जेल पन्ना में अपराध मुक्त जीवन और व्यवहार शुद्धि विषय पर एक कार्यक्रम रखा गया। जिसका लाभ 145 कैदी भाइयों ने लिया। कार्यक्रम में बीके सीता बहन जी ने सभी को समझाते हुए कहा कि मनुष्य जन्म से अपराधी नहीं होता। गलत संगत, नशा, सिनेमा और क्रोध, अपराध कराता है। अपराध मुक्त बनने के लिए खुद की गलतियों को महसूस करना जरूरी है। जेल को सुधार ग्रह मानकर अर्थात् परिवर्तन का केंद्र मानकर अपनी गलतियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यह मानव जीवन अमूल्य है इसलिए इंद्रियों को संयमित कर हम अपने जीवन को अपराधमुक्त कर सकते हैं। कर्मों की गति बड़ी गहन होती है। कर्मों के आधार पर ही यह संसार चलता है अपने किए हुए कर्मों से ही व्यक्ति महान या कंगाल बनता है। अपने कर्मों में परिवर्तन लाने से ही हम अपराधमुक्त बनते हैं। जब हम मेडिटेशन करते हैं तो हमारी इंद्रियां संयमित होती हैं हमारा मनोबल बढ़ता है, जिससे हमें अच्छे-बुरे की परख होती है और हम अपराध मुक्त बन जाते हैं।

सारे विश्व की मां बनकर स्वयं भगवान बच्चों की पालना कर रहे हैं

शिव आमंत्रण, हाथरस (उप्र) हाथरस पुलिस अधीक्षक विकास कुमार वैद्य ने कहा कि यहां आकर मुझे बहुत ही सुखद एवं शांति का अनुभव हो रहा है। वास्तव में आज मातृत्व दिवस पर मां की जितनी महिमा की जाए उतनी कम है। मां से बढ़कर इस दुनिया में कोई नहीं। सारे विश्व की मां बनकर स्वयं भगवान अपने सारे जगत के बच्चों की पालना कर रहे हैं परमपिता शिव परमात्मा द्वारा स्थापित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में मातृत्व शक्ति को सबसे आगे रखा है। ब्रह्माकुमारी बहनें मातृत्व भाव रख विश्व कल्याण का कार्य कर रही है। जनपद प्रभारी ब्रह्माकुमारी सीता ने कहा मातृ देवो भव-मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी, सच मां जैसी मां ही होती हैं। आज तक मातृ दिवस पर शरीर को जन्म देने वाली तथा शरीर की पालना करने वाली मां का हम सम्मान करते आये। सादाबाद प्रभारी वरिष्ठ राज योग शिक्षिका ब्रम्हाकुमारी भावना बहन जी ने कहा अब परम मां से संबंध जोड़कर उनके असीम प्यार का अनुभव करें साथ ही राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से परम मां के संबंध का सुंदर अनुभव भी कराया। पुलिस अधीक्षक की पत्नी विभा वैध ने कहा मां शब्द में जादू है एक ऐसी जादू की छड़ी जो घुमाते ही सारी मुश्किलों को आसान कर देती है । मां हमारे जीवन में भगवान के महत्व को समझाती हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन अतुल आंधीवाल एडवोकेट ने किया। पत्रकार शंभूनाथ पुरोहित, आर्यव्रत पुरोहित मुरसान प्रभारी ब्रह्माकुमारी बबीता, बीके मिथिलेश उपस्थित रहीं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का किया सम्मान, ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं की जानकारी दी

कार्यक्रम के बाद योगी आदित्यनाथ को ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके सुरेन्द्र एवं अन्य।

शिव आमंत्रण, अयोध्या/उप्र। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से वाराणसी जोन के अयोध्या में राजयोगिनी बीके सुरेंद्र दीदी एवं वरिष्ठ राजयोगी बीके दीपेंद्र के साथ स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शशी बहन ने मुलाकात कर उन्हें ईश्वरीय सौगात प्रदान की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने संस्था की वाराणसी एवं अयोध्या में चल रहीं अनेक ईश्वरीय सेवाओं की गतिविधियों की विस्तार से चर्चा की। एक बेहतर समाज के नव-निर्माण में संस्था द्वारा वैश्विक स्तर पर की जा रही निःस्वार्थ सेवाओं की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री ने संस्था के प्रति अपनी असीम शुभ कामनाएं प्रदान की।

इस अवसर पर बीके सुरेंद्र दीदी ने ने संस्था के मुख्यालय माउण्ट आबू पधारने का निमंत्रण देने के साथ शाल पहनाकर एवं बीके दीपेंद्र ने पुष्प गुच्छ प्रदान कर मुख्यमंत्री को सम्मानित किया। इस मौके पर अयोध्या के कई नामीग्रामी संत-महात्माओं के साथ कैबिनेट मंत्री एसके शर्मा भी उपस्थित रहे।

मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का है बड़ा योगदान: कर्नल राम सिंह

शिव आमंत्रण, सागर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग की ओर से संस्थान के न्यू टाउन प्रभाकर नगर मकरोनिया सेवाकेंद्र पर रविवार को सेवानिवृत्त सैनिकों के लिए सेमिनार आयोजित किया गया। स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण विषय पर आयोजित सेमिनार में मुख्य अतिथि सेना से सेवानिवृत्त कर्नल राम सिंह ने कहा कि मुझे माउंट आबू जाने का पहला सौभाग्य सन 1976 में प्राप्त हुआ। ब्रह्माकुमारी विद्यालय हर एक क्षेत्र में मानव मात्र को मूल्यों के प्रति जागृत कर रही हैं। मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करने में ब्रह्माकुमारीज़ का बड़ा योगदान है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया दीदी ने कहा कि जैसे आप फौजी देश की सरहद पर देश को दुश्मनों से लड़कर देश की सेवा करते हैं वैसे ही हम ब्रह्माकुमारी बहनें समाज के बीच रहकर मानवता और दैवी संस्कृति के दुश्मन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से दूषित हुई मानसिकता को राजयोग मेडिटेशन से दैवी संस्कृति और दैवी सभ्यता में परिवर्तन करने की सेवा करते हैं। बीके नीलम, बीके संध्या, मेजर गजराज सिंह, बीके पुष्पेंद्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

छतरपुर समर कैंप में बड़ी संख्या में बच्चों ने लिया भाग

आध्यात्मिक मूल्यों से मजबूत होती है जीवन की नींव

शिव आमंत्रण, छतरपुर/मप्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय विश्वनाथ कॉलोनी सेवाकेंद्र द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के अंतर्गत बच्चों की प्रतिभा को निखारने और उनमें नैतिक मूल्यों की समझ पैदा करने के लिए 'तीन दिवसीय समर कैंप' का आयोजन किया गया। प्रथम दिन बीके रमा ने कहा कि जब हमने सभी से कहा कि विद्यालय प्रांगण में हम बच्चों के लिए समर कैंप आयोजित कर रहे हैं तो लोगों ने हमसे पूछा कि आप वहां पर बच्चों को क्या कराएंगे तो मैंने सभी से कहा कि जैसे बच्चे समर कैंप में जाते हैं वहां पर सभी प्रकार की स्थूल चीजें बनाना सीखते हैं उनके टीचर्स उनको गुड मैनर्स भी सिखाते हैं इसी प्रकार यहां पर इस आध्यात्मिक वातावरण में आपके बच्चे जब आएंगे तो यह स्थूल चीजें बनाना तो सीखेंगे ही साथ-साथ ऐसे रिश्ते जिनमें प्यार हो, एक दूसरे की परवाह हो, एक दूजे के लिए सम्मान हो और साथ में व्यावहारिक ज्ञान हो, अनुशासन हो और यही हमारे खुशहाल जीवन की नींव हैं। यदि नींव मजबूत होगी तो जीवन में आने वाली सभी कठिनाइयों का हम मजबूती से सामना कर सकेंगे। तो यह 3 दिन आपके बच्चों के आध्यात्मिक विकास, नैतिक मूल्यों के विकास और जीवन के हर क्षेत्र में सफल बनाने वाले ईश्वर का साथ दिलाने के लिए इस समर कैंप का आयोजन किया जा रहा है। क्रिश्चियन स्कूल शिक्षिका अविधा अग्रवाल, मरियम माता स्कूल शिक्षक सुरेंद्र सिंह, बीके रीना, बीके कमला, बीके कल्पना के मार्गदर्शन में बच्चों ने आध्यात्मिक मूल्यों के महत्व को समझा।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

'आत्मानुभूति'

शिव आमंत्रण। जीवन के प्रत्येक कर्म में अनुभूति जुड़ी होती है। फिर चाहे वह सुखद अनुभूति हो या दुखद। लेकिन कर्म के परिणाम स्वरूप हमें कुछ न कुछ अनुभूति की महसूसता जरूर होती है। शिक्षा, रहन-सहन, जीवन मूल्य, वातावरण के हिसाब से प्रत्येक व्यक्ति की जीवन के प्रति अपनी अनुभूति होती है। आध्यात्म और अनुभूति को एक-दूसरे का पूरक कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि आध्यात्म की गहराई अनुभूतियों से ही होकर गुजरती है। हमारी अनुभूतियों का संसार जितना वृहद, विस्तृत और समग्र होता जाता है, हम उतनी ही गहराई से इंद्रियों की अनुभूतियों की महसूसता कर पाते हैं। आध्यात्मिक जीवन में एक लंबी और सफल यात्रा तय करने के बाद ही हम खुद को आत्मानुभूति की अवस्था की ओर बढ़ता हुआ पाते हैं। यह एक-दो दिन में प्राप्त होनी वाली वस्तु या योग्यता नहीं है। यह तो खुद का खुद से संवाद, आत्मा का परमात्मा से संवाद की अनवरत यात्रा के परिणामस्वरूप प्राप्त जीवन का सबसे अमूल्य तोहफा, वरदान है। एक बार आत्मानुभूति होने के बाद मानव मन स्वाभाविक रूप से संसार की भौतिक वस्तुओं, वैभव, यहां तक कि इस नश्वर देह से खुद को विरक्त और उपराम महसूस करता है। पथिक इस संसार में रहते भी अलौकिक-पारलौकिक संसार में सदा मगन रहता है। आत्मानुभूति ही जीवन का शाश्वत और परम सत्य है। इसके बाद मानव मन में कोई जिज्ञासा, पिपासा और लालसा नहीं रह जाती है। क्योंकि आत्मा के गुणों, शक्तियों की अनुभूति होने के बाद कुछ जानना बाकी नहीं रह जाता है। जब तक आत्म स्वरूप में स्थित नहीं होते हैं तब तक परमात्म स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते हैं।

तो सरल हो जाएगा आत्मानुभूति करना... मैं कौन हूं? कहां से आया हूं? मेरा वास्तविक घर कहां है? मेरा स्वरूप क्या है? मेरा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर क्या रोल है? इस जीवन के बाद अगली यात्रा क्या रहेगी? कर्मों की गुह्यगति क्या है? परमात्मा कौन हैं? उनका वास्तविक परिचय? परमात्मा के कर्तव्य क्या हैं? परमात्मा और देवताओं में क्या संबंध है? आदि वह सवाल हैं जिन्हें जानने, समझने का प्रयास हर मानव को अपने जीवनकाल में जरूर करना चाहिए। जिस राही ने इन सवालों के जवाब ढूंढ लिए उसके लिए आत्मानुभूति करना सहज और सरल हो जाता है।

आध्यात्म की सर्वोच्च अवस्था है आत्मानुभूति

स्थान और अनुभूति... अनुभूति का स्थान से गहरा संबंध है। जब हम किसी पवित्र स्थान, देवालय, प्रकृति के सान्निध्य के बीच जाते हैं तो मन स्वाभाविक रूप से वहां के शुद्ध, पवित्र बाइब्रेशन से प्रफुल्लित और आनंदित हो उठता है। यह सुखद अनुभूति हमारी यादों में चिरस्मृति के रूप में बस जाती है। वहीं किसी अपवित्र स्थान के बीच होने पर दुःख, दर्द, चिंता, डर के रूप में अनुभूति होती है। यही कारण है कि द्वापर काल से ही ऋषि-मुनियों, तपस्वियों ने आत्मानुभूति के लिए जंगल और प्रकृति का सान्निध्य चुना। मां प्रकृति का सान्निध्य हमें खुद से जोड़ने में सहायक होता है। आध्यात्म के पथिक और आत्मानुभूति की राह में बढ़ रहे राही के लिए जरूरी है कि अपनी दिनचर्या में से कुछ पल प्रकृति के बीच गुजारें। एकांत और शांतिमय वातावरण में अपने अंदर की आवाज महसूस करें।

आत्मज्ञान से परे है आत्मानुभूति... आत्मानुभूति का संसार आत्मज्ञान से विस्तृत और विशाल है। क्योंकि ज्ञान की सीमा जहां समाप्त हो जाती है वहीं आत्मानुभूति का कोई अंत नहीं है। यह तो वह सागर है जिसकी गहराई में जितने उतरते जाते हैं उसकी थाह उतनी ही गहरी होती जाती है। इसका कोई छोर नहीं है। क्योंकि आत्मा को जब परमात्मा के संग का रंग लग जाता है और परमात्म प्यार की सुखद अनुभूति होने लगती है तो उसके आगे शेष कुछ रह नहीं जाता है। कई बार ज्ञानी, आध्यात्मवादी, संत-महात्मा आत्मानुभूति की राह में चलते-चलते उसे दूर की वस्तु समझ, नेति-नेति... कहकर अपना रास्ते मोड़ लेते हैं। क्योंकि आत्मानुभूति का मार्ग संयम, त्याग-तपस्या, वैराग्य और सतत् अभ्यास से होकर गुजरता है। ये तो जीवन की अनंत यात्रा है जिसमें कई बार यात्री ताउम्र चलने के बाद भी मंजिल पर पहुंचने का सुख नहीं ले पाता है। आत्मानुभूति का मूलमंत्र है राजयोग। राजयोग के राज जानने के बाद जीवन का कोई राज जानना बाकी नहीं रह जाता है।

यौगिक खेती से किसानों की तरक्की की राह हुई आसान

» शिव आमंत्रण, नासिक (महाराष्ट्र)। शास्त्रों के कथन अनुसार श्रीराम चन्द्र के चरण स्पर्श से पावन हुई नासिक (महाराष्ट्र) की भूमि में महाराष्ट्र शासन के कृषि विभाग द्वारा एक शानदार भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। उस कार्यक्रम महाराष्ट्र के राज्यपाल तथा अनेक मंत्रिगण की उपस्थिति में राज्य शासन के द्वारा कृषि क्षेत्र में अति विशिष्ट कार्य करने वाले किसानों को कृषिमित्र, कृषिभूषण जैसे विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इसी कार्यक्रम में मालेगांव, तहसिल - अर्धापुर, जिला - नान्देड के पिछले अनेक वर्षों से शाश्वत यौगिक खेती करने वाले किसान ब्रह्माकुमार भगवान रामजी इंगोले (बालुभाई) को कृषिभूषण सेन्द्रिय खेती वर्ष 2019 यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार शाश्वत योगिक खेती करने वाले किसान को प्राप्त होना यह शाश्वत योगिक खेती पद्धती की दृष्टि से बहुत ही गौरव की बात है तथा शाश्वत योगिक खेती पद्धती को राजाश्रय मिलने के समान माना जाता है। अपनी स्वयं की खेती की 1 हेक्टर 20 आर भूमि को सेन्द्रिय प्रमाणिकरण कर अपने परिसर के 33 किसानों का 'ओम शांती ऑरगेनिक फार्मर गृप' नाम का समूह बनाकर उनकी भी 50 एकड भूमि सेन्द्रिय प्रमाणिकरण कर उनके कृषि उत्पादों का ब्रैण्डिंग कर किसानों के जीवनस्तर को ऊंचा उठाने क का कार्य करने के लिए ब्रह्माकुमार भगवान भाई को यह पुरस्कार दिया गया है। इस पुरस्कार को ब्रह्माकुमार भगवान इंगोले के साथ वसंत नगर नान्देड की संचालिका बीके स्वाती, गयाबाई इंगोले ने राज्यपाल भगतसिंग कोश्यारी द्वारा प्राप्त किया।

सृष्टि चक्र] आज प्रकृति के सभी तत्व अपना संतुलन खोने लगे हैं...

स्वर्णिम युग में तन-मन की शुद्धता के कारण दिव्यगुणों से संपन्न देवी-देवता कहलाते थे

- जैसे जैसे रसायनिक खादों का उपयोग बढ़ता गया, जमीन के अंदर की उत्पादन क्षमता कम होती गई।

कार्यक्रम के पश्चात सामूहिक फोटो में बीके निर्मला तथा अन्य भाई-बहन।

» शिव आमंत्रण, रांची/झारखंड- आत्मनिर्भर किसान अभियान का आयोजन ब्रह्माकुमारीज़ के चौधरी बगान, हरमू रोड, रांची में किया गया। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, बागवानी विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार तिवारी ने कहा कि इस पृथ्वी पर आदिकाल सतयुग का जब प्रारंभ हुआ, उस समय की प्रकृति सम्पूर्ण सतोप्रधान थी, खेतों द्वारा पौष्टिक शुद्ध अन्न, फल, सब्जियां दूध आदि प्राप्त होते थें, इसलिए हरएक की काया सम्पूर्ण निरोगी थी। हर मानव मन और तन की शुद्धता के फलस्वरूप दिव्य गुणों से सम्पन्न देवी-देवता कहलाते थे। आपसी स्नेह, सहयोग, सद्भावना, सुख, शांति, पवित्रता के कारण भारत सुख-शांति, धन्यधान्य सम्पन्न सोने की चिड़िया थी।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षा प्रसार विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बीके ऊंझा ने कहा सृष्टि चक्र के नियम प्रमाण धीरे-धीरे मनुष्य आत्मा के साथ-साथ प्रकृति के पांचों तत्व भी सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो अवस्था में आते गये, जिसके फलस्वरूप आत्मा और प्रकृति दोनों की शक्तियां क्षीण होती गई। मध्यकाल में आत्मा अपने मूल पवित्र स्वरूप को भूल कर देह-अभिमान के वशीभूत हो गई, जिससे उसमें सब विकार प्रवेश हुए, फलस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि होती गयी, आवश्यकतायें बढ़ती गई।

सुभाषचन्द्र गर्ग, उप महाप्रबंधक, नाबार्ड ने कहा मानव की मूलभूत आवश्यकतायें जैसे अन्न वस्त्र निवास सहज प्राप्त हो सके इसके लिए हमें सचेत रहना होगा ताकि आने वाली नई पीढ़ी भी सुख शांति से रह सके। इसकी पूर्ति के लिए जमीन, जल, वनस्पति, पशु, पंछी एवं जैविक विविधता का योग्य संवर्धन शाश्वत यौगिक खेती उत्पादन के द्वारा पर्यावरण को संतुलित रखना जरूरी है। कार्यक्रम में शैलेन्द्र कुमार, सहायक निदेशक, कृषि विभाग ने कहा उन्नत खेती उत्पादन स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। अतः अब समय की पुकार है अपने शाश्वत स्वरूप को पहचान कर यौगिक प्रक्रिया को समझकर और अपनाकर शाश्वत और यौगिक खेती का प्रयोग तथा प्रसार किया जाय। वैज्ञानिक कृष्ण प्रसाद ने कहा कि आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा विश्व आबादी को ध्यान में रखते हुए, उत्पादन को बढ़ाने के लक्ष्य से आधुनिक वैज्ञानिक रीति से खेती शुरू की गई। कृषि वैज्ञानिक डॉ. चन्द्रशेखर ने कहा कि जमीन की हालत सुधारने के लिए एकमात्र उपाय है, शुद्ध संकल्पों का योग वा प्रयोग। इस यौगिक खेती द्वारा हम जो उत्पादन लेगें उसके अंदर जंतुनाशक दवाई अथवा रासायनिक खादों का उपयोग न होने से शुद्ध अन्न मिलेगा। इस शुद्ध अन्न से मन शक्तिशाली बनेगा और काया भी निरोगी हो जाएगी।

डॉ हरिहरण, सेवानिवृत, निदेशक प्रभारी, कृषि व्यवसाय प्रबंधन ने कहा कि तपस्या अर्थात योग के अन्दर एक अदभुत शक्ति समायी हुई होती है, जिससे असंभव भी संभव दिखाई देता है। परमात्मा ने हमें अति सहज योग सिखाया है। जिसे राजयोग कहते हैं।

सेवाकेन्द्र की संचालिका राजयोगिनी बीके निर्मला ने आशीर्वचन व्यक्त किये।

परमात्मा शिव के स्मरण से मिलता है सर्व दुखों से छुटकारा: बीके रंजू

» शिव आमंत्रण, मधेपुरा/बिहार। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मधेपुरा के तत्वावधान में साहुगढ़ भातुबाजार वार्ड -2 में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के उप महाप्रबंधक (इंजीनियर) नरेश कुमार एवं प्रदेश महासचिव महिला प्रकोष्ठ सह राष्ट्रीय जनता दल नेत्री रागिनी रानी उर्फ बीके डॉली के निवास स्थान पर शिव झंडोत्तोलन एवं भव्य स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय प्रभारी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी रंजू ने कहा कि आध्यात्म मनुष्यों को अज्ञान अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का ज्ञान है। मनुष्य की अपनी बुराइयों को अर्पण करने का प्रयास करना चाहिए। जिससे जीवन में सुख, शांति का संचार हो सके। उन्होंने कहा हम सभी आत्माओं का पिता परमपिता शिव है। इसलिए उस पिता परमात्मा में अपना मन लगाकर रखना चाहिए। अपने मनोविकारों को दग्ध करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में अपनाना चाहिए। संगम युग आत्मा और परमात्मा के मिलन का युग है। मुख्य अतिथि आर.आर .ग्रीन फील्ड इंटरनेशनल स्कूल के डायरेक्टर राजेश कुमार कहा कि सत्संग से प्राप्त ज्ञान द्वारा ही हम अपने जीवन को सकारात्मक बनाकर तनाव मुक्ति जीवन जी सकते हैं। प्रदेश महासचिव महिला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय जनता दल रागिनी रानी उर्फ डोली दीदी ने भी विचार व्यक्त किए।

इंस्टीट्यूट का राज्यपाल ने किया उद्घाटन

» शिव आमंत्रण, कुरूक्षेत्र हरियाणा। निट नेशनल इंस्टीट्यूट टेक्नोलॉजी, कुरूक्षेत्र में थॉट लैब का उदघाटन करते हुए हरियाणा के गवर्नर बंडारू दत्तात्रेय, राजयोगिनी बीके प्रेम, बीके सरोज, बीके अनीता, बीके पांडेयमणि, बीके मृत्युंजय, निट के डायरेक्टर रमना रेडी।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य 150 रुपए, तीन वर्ष 450
आजीवन 3500 रुपए
नोटः कागज और प्रिंटिंग कीमत बढ़ने के कारण इस समाचार पत्र के दाम में बढ़ोतरी की गई है।

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month
Published on 14th of each month & Issue- JULY 2022

■ प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ■ संपादकः ब्र.कु. कोमल ■ संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ■ RNI No.: RJHIN/2013/53539